हिन्दू चेतना

(पाक्षिक)

E-mail:hinduchetna.patrika@gmail.com

युगाब्द 5118 | हिन्दवः सोदरा सर्वे, न हिन्दूः पतितो भवेत्। मम दीक्षा हिन्दुरक्षा मम मंत्रः समानता।। | 2073 वि.सं.

अनुक्रमणिका

विषय	पृष्ठ
श्रीमद्भगवद्गीता	3
दिन दर्शिका	4
हिन्दू हेल्प लाइन ने शुरु की एच एच एल टैक्स लाइन	5
आतंकी कमर तोड़ने बजरंग दल जुटेगा नकदी विहीन (Cashless) व्यवहार में	6
जम्मू-कश्मीर में 200 आतंकी सक्रिय	6
विश्व हिन्दू परिषद् ने हरसौलाष से मनाया शौर्य दिवस	7
पूज्य साधू सन्त सूची जम्मू प्रान्त	8
केजरीवाल केवल वोटो की भाषा समझते है	9
हिंदी का स्वाभिमान बचाने समाचार-पत्रों का शुभ संकल्प	10
देश के साथ राजनैतिक पार्टियाँ भी कैशलेस बने, डिजिटल बने	14
मशहूर दरगाह में प्रवेश के लिए लड़ी थी...	15
ग्रेट ब्रिटेन के पूर्व चुनाव आयुक्त भारतीय मतदाता संगठन से मिले	16
विपक्षीय विरोध के ढीले कलपुर्जे	17
विहिप क्षेत्रीय संगठन मंत्री का जम्मू-कश्मीर प्रवास	19
'नये वर्ष में नये भारत का निर्माण'	20
नोट बंदी से भ्रष्टाचार मुक्त डिजिटल भारत की ओर	21
कभी भारत का हिस्सा और हिन्दू राष्ट्र था...	22
निर्धन का कल्याण	23
सम्पादक के नाम	24
कुटुंब,राष्ट्रीयता व सामाजिक मर्यादाएं	25
समवेदना संदेश	26

अथदशमोऽध्यायः

अक्षराणामकारोऽस्मि द्वन्द्वः सामासिकस्य च ।
अहमेवाक्षयः कालो धाताहं विश्वतोमुख ।।३३।।

मैं अक्षरों में आकार हूँ और समासों में द्वन्द्व समास हूँ। अक्षयकाल अर्थात् काल का भी महाकाल और सब ओर मुखवाला धाता अर्थात् सबका धारण-पोषण करने वाला भी मैं ही हूँ।

चाहे स्वर हो अथवा व्यंजन-बिनु आकार नहीं हो उच्चारन
व्याप्त अकार सभी वर्णों में-मैं अकार अस्तु अक्षरों में
द्वन्द समास भी मुझे जानो-अर्थ प्रधान शब्द तहँ दोनों
सर्ग प्रलय आदिक जो होती-गणना वहाँ सूर्य से होती
ऐसा काल न स्थिर होता-ज्योतिष में प्रयुक्त वह होता
सूर्य लीन जब महाप्रलय में-लीन काल भी महा प्रलय में
तब जिस काल से करें गणना-उसको अक्षय काल समझना
तब सन्दर्भ काल अक्षय मैं-काल काल का महाकाल मैं

दोहा

दृष्टि सदा सर्वत्र मम, सृष्टि विराट् स्वरूप ।
धारण पोषण सभी का, करने वाला रूप ।।
सर्वव्यापी और मैं, परमेश्वर अखिलेश ।
कुछ भी मुझसे भिन्न नहिं, मैं धाता लोकेश ।।

मृत्युः सर्वहरश्चाहमुद्भवश्च भविष्यताम् ।
कीर्तिः श्रीर्वाक्च नारीणां स्मृतिर्मेधा धृतिः क्षमा।।३४।

मैं सबका हरण करनेवाली मृत्यु और उत्पन्न होने वालों का उद्भव हूँ। स्त्री-जाति में कीर्ति, श्री, वाक्, स्मृति, मेधा, धृति और क्षमा मैं हूँ।

मैं ही मृत्यु समस्त जीव में-हर लेता सर्वस्व मरण में
यदि जीव की न स्मृति हरता-पूर्व जन्म बन्धन किमि सहता
आग जिनकी उत्पति संभव-उनका भी मैं ही हूँ उद्भव
कीर्ति क्षमा अरु मेधा स्मृति-वाक् श्री तथा सप्तम है धृति
विश्व श्रेष्ठ ये सप्त स्त्रियाँ-यह सातों मेरी विभूतियाँ
सातों स्त्री वाचक गुण भी-सत्पुरुषों के आभूषण भी

सुगम गीता व्याख्या पुस्तक से
लेखक - **श्री प्यारेलाल त्रिवेदी**
सी-2/53ए, लॉरेंस रोड, केशवपुरम्, दिल्ली-110035

पौष कृष्ण पक्ष विक्रम संवत् २०७३
१६ दिसम्बर से ३१ दिसम्बर २०१६ ई. तक

सूर्य दक्षिणायन — हेमन्त ऋतु

दिन	तिथि	नक्षत्र	प्रविष्टि सौर मास	दिनांक आंग्लमास	विशेष विवरण
शुक्रवार	तृतीया	पुनर्वसु	२	16	
शनिवार	चतुर्थी	पुष्य	३	17	श्री गणेश चतुर्थी व्रत
रविवार	पञ्चमी	श्लेषा	४	18	
सोमवार	षष्ठी	मघा	५	19	
मंगलवार	सप्तमी	पूर्वाफाल्गुनी	६	20	
बुधवार	अष्टमी	उत्तराफाल्गुनी	७	21	रुक्मणी अष्टमी, उत्तरायण प्रा., शिशिर ऋतु प्रा.
गुरुवार	नवमी	हस्त	८	22	
शुक्रवार	दशमी	चित्रा	९	23	पार्श्वनाथ जयंती
शनिवार	एकादशी	स्वाति	१०	24	सफला एकादशी व्रत
रविवार	द्वादशी	विशाखा	११	25	क्रिसमय डे
सोमवार	त्रयोदशी	अनुराधा	१२	26	सोम प्रदोष व्रत
मंगलवार	त्रयोदशी	ज्येष्ठा	१३	27	मास शिवरात्रि व्रत
बुधवार	चतुर्दशी	ज्येष्ठा	१४	28	पितृकार्येषु अमावस्या
गुरुवार	अमावस्या	मूल	१५	29	स्नानदानादि अमावस्या
शुक्रवार	प्रतिपदा	पूर्वाषाढ़	१६	30	
शनिवार	द्वितीया	उत्तराषाढ़	१७	31	आरोग्य व्रत

श्री अष्टावक्र गीता (जनक उवाच)

सुखादिरूपानियमं भावेष्वालोक्य भूरिशः ।
शुभाशुभे विहायास्मादहमासे यथासुखम् ॥७॥ १३

इसलिए बहुत जन्मों में सुखादि की अनित्यता को बार-बार देखकर, शुभ और अशुभ के भावों को छोड़कर मैं सुखपूर्वक स्थित हूँ।

प्रकृत्या शून्यचित्तो यः प्रमादाद्भावभावनः ।
निद्रितो बोधित इव क्षीणसंसरणो हि सः ॥१॥ १४

"जो व्यक्ति स्वभाव से ही शून्यचित्त वाला है और प्रमाद से विषयों का सेवन करता है और सोता हुआ जागते हुए के समान है, वह संसार से मुक्त है।"

हिन्दू हेल्प लाइन ने शुरु की एच एच एल टैक्स लाइन
सामान्य लोगों के टैक्स सम्बंद्धित समस्याओं पर देगी निःशुल्क सलाह

-डॉ. प्रवीण तोगड़िया

मथुरा, 26 नवंबर, 2016

प्रवास, आरोग्य, शासन/प्रशासन, कानून/न्याय और दर्शन/यात्रा आदि धार्मिक इमरजेंसी समस्याओं में लोगों की मदद के लिए अप्रैल 2011 में आरम्भ की गयी हिन्दू हेल्प लाइन अब देश दुनिया में लाखों की मदद करने में सफल हुई है। मथुरा में हिन्दू हेल्प लाइन के कार्यकर्ताओं, समन्वयकों और अन्य अधिकारियों की वार्षिक बैठक में देशभर से आएँ लोगों के साथ चर्चा में उत्साह और मदद करने की उम्मीद थी। वात्सल्य धाम में हुए इस बैठक का उद्घाटन परम पूजनीय साध्वीश्री ऋतंभरा जी ने किया और डॉ. प्रवीण तोगड़िया जी की इस सामाजिक पहल का स्वागत करते हुए हिन्दू हेल्प लाइन को आशीर्वाद दिया।

इस पर बोलते हुए विश्व हिन्दू परिषद के अंतरराष्टीय कार्याध्यक्ष और हिन्दू हेल्प लाइन के मार्गदर्शक डॉ. प्रवीण तोगड़िया ने कहा:

''हिन्दू हेल्प लाइन'' ने नए उपक्रम अभियान शुरु करने घोषणा की:

१. **एक मुट्ठी अनाज :** दाताओं से एक मुट्ठी अनाज इकट्ठा कर जिन्हें अन्न की जरुरत हैं ऐसे गरीबों के घरों में सम्मान से वह अनाज पहुँचाएँगे हिन्दू हेल्प लाइन के लाखों कार्यकर्ता। इस के लिए सुविध ाजनक थैली भी तैयार की गयी है, जो घरों-घरों में दी जायेगी, जिसमें अलग-अलग खानों में हर दिन एक मुट्ठी गेहूं, चावल, दाल आदि डाले जा सकते है। यह अनाज कार्यकर्ता इकट्ठा करेंगे और गरीबों में बाँटेंगे। कई राज्यों में यह योजना अन्नपूर्णा अनाज बैंक और एक मुट्ठी अनाज के नामों से हमने शुरु की है और अब तक सैकड़ों गरीब परिवारों को सम्मान से अनाज घर पर पहुँचाया गया है। अनाज की थैली और अनाज देते समय हिन्दू हेल्प लाइन के कॉल सेण्टर पर कॉल कर अन्न दान करने वाले सुनिश्चित करें कि अनाज इकट्ठा करने आये व्यक्ति सच में हिन्दू हेल्प लाइन के कार्यकर्ता है।

राष्ट्रीय कॉल सेण्टर क्रमांक: 020-66803300 और 07588682181 ईमेल: contacthhl@gmail.com

2. आज की अर्थ स्थिति में आवश्यक सुविधा-सेवा हिन्दू हेल्प लाइन ने आरम्भ की है : ''एच एच एल टैक्स लाइन''! पान के ठेले वाले से छोटे दुकान चलाने वाले तक और घर में लंच का टिफिन बनाकर कार्यालयों में देने वाली महिलाओं से भेल-पूड़ी बेचने वालों तक, सभी को टैक्स के विषय में अनेकों प्रश्न अब पडे हैं। प्रामाणिकता से, मेहनत से कमाई कर घर/दुकान चलाने वालों को टैक्स किस फॉर्म में भरना, लिखापढ़ी नहीं आती तो कैसे भरना, क्या-क्या कागज उसके साथ जोड़ना, कितना रुपया भरना होगा, कहाँ भरना, कब और क्यों भरना, ये और ऐसे अनेकों समस्याएँ सता रही है। लोगों की समस्याएँ समझकर उनके मित्र हिन्दू हेल्प लाइन ने 'एच एच एल टैक्स लाइन' शुरु की है। इसमें टैक्स सम्बंद्धित

शेष पृष्ठ 9 पर.....

आतंकी कमर तोड़ने बजरंग दल जुटेगा नकदी विहीन (Cashless) व्यवहार में

-डॉ. सुरेन्द्र जैन

नई दिल्ली। नवंबर 28, 2016. विश्व हिन्दू परिषद् और बजरंग दल ने नकदी विहीन व्यवहार द्धबेंसमे ज्तंदेंबजपवदे्र का स्वागत करते हुए अपने कार्यकर्ताओं को इसका प्रशिक्षण देने के लिए आवश्यक कदम उठाने का निर्णय लिया है। विश्व हिन्दू परिषद के अंतर्राष्ट्रीय संयुद्र महा मंत्री डा सुरेन्द्र जैन ने आज कहा कि स्वयं प्रशिक्षण लेने के बाद बजरंग दल के कार्यकर्ता देश के नागरिकों को इस विषय में जागरूक करेगे और आवश्यक प्रशिक्षण भी प्रदान करेंगे। उन्होंने विश्वास व्यद्र किया कि ये प्रयास काले धान के विरु) लड़ाई में महत्वपूर्ण कदम साबित होंगे। यह लड़ाई केवल सरकार की नहीं अपितु संपूर्ण देश की है जिसमें देश की जनता ने अब भाग लेने की ठान ली है।

आज एक पत्र्कार वार्ता को संवोधित करते हुए डा जैन ने यह भी कहा कि 1000 व 500 रु के नोटों को समाप्त करने के सुपरिणाम सामने आने लगे हैं। आतंकवाद, नक्सलवाद, तस्करी और कालाधान पर लगाम लगी है। सामान्य जनता को कठिनाइयां अवश्य हुई हैं जिनका समाधाान भी हो रहा है, यह दिखाई देने लगा है। जनता की सुविधााओं और काले धान के विरु) लड़ाई में नकदी विहीन व्यवहार द्धबेंसमे ज्तंदेंबजपवदे्र एक महत्वपूर्ण कदम है। आर्थिक लेनदेन में पारदर्शिता देश के विकास के लिए भी आवश्यक है।

प्रैस वार्ता में बजरंग दल के राष्ट्रीय सहसंयोजक मनोज वर्मा भी उपस्थित थे। उन्होंने घोषणा की कि काले धान के विरु) इस लड़ाई में देश की युवा शद्रि पूरे तौर पर साथ में है। बजरंग दल के लाखों कार्यकर्ता देश भर में युवकों को नकदी विहीन व्यवहार का प्रशिक्षण देकर इस अभियान को स्रुल बनाएंगे।

-विनोद बंसल
(राष्ट्रीय प्रवक्ता)
विश्व हिन्दू परिषद
@vinod_bansal M-9810949109

जम्मू-कश्मीर में 200 आतंकी सक्रिय

नयी दिल्ली। गृह राज्यमंत्री ने कहा कि जम्मू-कश्मीर में करीब 200 आतंकवादी सक्रिय हैं। इस साल सितंबर तक 105 आतंकी एलओसी पार करके जम्मू-कश्मीर में दाखिल हुए हैं। केंद्र ने राज्य सरकार के साथ मिलकर सीमा-पार से घुसपैठ रोकने के लिए कई कदम उठाए हैं। इनमें मुख्य तौर पर बॉर्डर मैनेजमेंट को मजबूत करना और अंतर्राष्ट्रीय सीमा, एलओसी पर कई चरणों में तैनाती ज्यादा घुसपैठ वाले इलाकों में चारदीवारी का निर्माण और मरम्मत करना, बंकर और नालों पर पुल बनाने जैसे कदम भी उठाए गये हैं। इसके अलावा आधुनिक तकनीक, हथियार और सुरक्षा बलों के लिए बेहतर उपकरणों की व्यवस्था की जा रही है। सरकार ने सीमा पर घुसपैठ-रोधी आधुनिक व्यवस्था करने का फैसला किया है। 'भारत-पाकिस्तान और भारत-बांग्लादेश सीमा पर कॉमप्रिहेंसिव इंटिग्रेटेड बॉर्डर मैनेजमेंट सिस्टम के तौर पर पायलट प्रोजेक्ट्स को मंजूर किया गया है।

-दै0ट्रिब्यून

विश्व हिन्दू परिषद् ने हर्षोल्लास से मनाया शौर्य दिवस

नई दिल्ली 6 दिसम्बर। विश्व हिन्दू परिषद् एवं बजरंग दल द्वारा राम जन्मभूमि पर 1992 में विदेशी लुटेरो द्वारा जबरन स्थापित किये गए विवादित ढाचे को गिराकर भारतीय इतिहास की एक गौरवपूर्ण उपलब्धि शौर्य दिवस के रूप में हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। राजधानी के अनेक स्थानों पर शोभायात्रा निकाली गई जिसमें हजारों कर सेवक ने बढ़चढ़कर हिस्सा लिया। मुख्य अथिति राजेश पांडे (अखिल भारतीय संयोजक बजरंग दल) एवं मनोज वर्मा सहसंयोजक बजरंग दल, नीरज धनेरिया (संयोजक बजरंग दल) की उपस्थिति विशेष उल्लेखनीय रही। इस अवसर पर अनेक स्थानों पर रक्तदान शिविर का भी आयोजन किया गया। श्री करुणा प्रकाश जी क्षेत्रीय संगठन मंत्री भी ने अपने संबोधन में कहा कि देश पर आक्रमण करने वाले विदेशी लुटेरे द्वारा भारतीय संस्कृति के प्रतीकों को गिराकर जो भी इमारतें खाड़ी की गयी उन सभी इमारतो को संस्कृति एव सनातन धर्म में विस्वास रखने वालों को मिटाना होगा। भारत को छोड़कर विश्व् के किसी भी देश में आक्रमणकारियों द्वारा बनाये गए गुलामो के प्रतीकों को संरक्षित करके नहीं रख जाता है। हमे भी ये गुलामी की मानसीकता छोड़नी होगी।

भारतीय संस्कृति के प्रतीकों की पुनः सथापना करनी होगी जिससे भारत में आने वाले विदेशी पर्यटक को भारतीय संस्कृति की वास्तिवक झलक मिल सके। इस कड़ी में मथुरा और कशी में बनाये हुए विवादित स्थलों को मुक्त कराया जाना प्राथमिक से होना चाहिये। मुग़ल स्थापत्य पर संरक्षित इमारतो को भारतीय मंदिरों को तोड़ कर बनाई गयी है। इनके प्राचीन गौरव पुनः सथापित की आवश्कता है।

इस अवसर पर विहीप दिल्ली प्रान्त के मीडिया प्रभारी महेंद्र रावत ने अपने संबोधन में कहा है कि शौर्य दिवस मनाते हुए हम गौरव का अनुभव कर रहे है लेकिन असली खुशी तब होगी जब राम जन्मभूमि पर श्री राम जी का मंदिर बनायेगा। ये बड़ी शर्म की बात है की 24 वर्ष बाद भी राम लाला टेंट में विराज है जिस मंदिर को 24 दिन में बन जाना चहिये था वहां 24 वर्ष बाद भी उसकी नीव नहीं पड़ी है।

प्रेषक : **महेंद्र रावत**
मीडिया प्रभारी, विहिप

मुस्लिम समुदाय ने मंदिर निर्माण के लिए दान की कब्रिस्तान की जमीन

सीकर। सीकर जिले के कोलिडा गांव में मुस्लिम समुदाय द्वारा इस्तेमाल में बंद हो चुके एक कब्रिस्तान की जमीन हिंदू समुदाय के लोगों को मंदिर का निर्माण करने के लिए दान की है। बीते कई सालों से कब्रिस्तान की जमीन का कोई इस्तेमाल नहीं हो रहा था। हिंदुस्तान टाइम्स की इस खबर के मुताबिक गांव का जाट समुदाय से जुड़े मील समाज को मंदिर निर्माण के लिए जमीन की जरूरत थी। ऐसे में गांव के मुसलमान उनकी इस मदद करने के लिए आगे आए। सभी सदस्यों के साथ बातचीत के बात जमीन को मंदिर निर्माण के लिए दान करने का फैसला लिया गया। जमीन दो हिस्सों में दान की गई थी। सबसे पहले 1 बीघा जमीन दी गई थी जिस पर सुर्जल माता के मंदिर का निर्माण किया गया था।

–जनसत्ता

परमात्मा सत्य है, उसका पवित्र वचन सत्य है। उसका प्रेम असीम है। –गुरुनानक

पूज्य साधू सन्त सूची जम्मू प्रान्त

1	पूज्य रामेश्वर दास जी महामण्डलेश्वर	राम मंदिर, पुरानी मंडी, जम्मू	9419193602
2	पूज्य रामस्वरूप दास जी महामण्डलेश्वर	समाह गफुा, अखनूर	9419726378
3	पूज्य दिव्यानन्द जी महामण्डलेश्वर	कैलाश आश्रम, चिनौर, जम्मू	9419362813
4	पूज्य रामप्रिय दास जी	अखनूर	7298214885
5	पूज्य रघुवीर दास जी	बन्द्राल, अखनूर	
6	पूज्य बलदेव दास जी	माता मंदिर, ज्यौड़ियां	
7	पूज्य महावीर दास जी त्यागी	खौड़ मंदिर, अखनूर	
8	पूज्य दत्त गिरी जी शिव मंदिर,	साम्बा	9906182791
9	पूज्य ऋषिवन जी महामण्डलेश्वर	रणवीरेश्वर मंदिर, शालामार, जम्मू	
10	पूज्य राम मिलन दास जी महंत	उदेयवाला	
11	पूज्य महेन्द्र दास जी	बडयाल कांजियां, हनुमान नगर, आरएसपुरा	
12	पूज्य प्रकाशानन्द जी महामण्डलेश्वर	रामेश्वर आश्रम, आरएसपुरा	9469386777
13	पूज्य जनक राज शास्त्री	बड़ी ब्राह्मण, जम्मू	
14	पूज्य गंगाधर जी	स्वांजना आश्रम, जम्मू	
15	महंत रामपुरी दास जी		9858192395
16	संत प्रभुदास जी	जखवड़, पटियारी, कठुआ	9419659169
17	पूज्य राम लाल शास्त्री	कठुआ	9797678515
18	पूज्य पूर्णदास जी	पल्लीमोड़	
19	पूज्य ऐतबार नाथ	नगरीपरोल, कठुआ	
20	महंत रामकिशोर दास जी	हनुमान मंदिर	
21	पूज्य रामशरण दास जी नागा	तारा नगर	9906106090
22	पूज्य रामदास जी	राधा कृष्ण मंदिर	
23	महंत बलदेव दास जी	परशुराम मंदिर, लखनपुर, कठुआ	9858659036
24	पूज्य सुभाष शास्त्री जी महामण्डलेश्वर	नोनाथ आश्रम, घग्वाल, साम्बा	
25	पूज्य संत रामसरण दास जी	रियासी	9596253079
26	पूज्य सन्त परमानन्द पुरी	बुद्धि, साम्बा	9080679919
27	स्वामी श्री दिनेश भारती, गुरू जी	भगवती महाकाली शक्ति पीठ, गलवडे चक्क, गजनसू मढ़ जिला-जम्मू पिन कोड-181206	 9906230957

पूज्य साध्वी सन्त सूची जम्मू प्रान्त

क्र०	नाम	पता	मोबाईल
1	पूज्य साध्वी सेवानन्द सरस्वती जी	वेद्यांत आश्रम, खेरी बिशनाह	9622327770 श्रीमती वीणा शर्मा
2	पूज्य साध्वी सवितानन्द जी	पूज्य प्रेमानन्द आश्रम दोमाना, फलौरा गांव, जम्मू	9419263452
3	पूज्य साध्वी आचूतानन्द जी ज्योतिमयीविष्णु मंदिर,	अखनूर	9622132993 01924252981
4	पूज्य साध्वी चेतनाज्योति जी	गुरूचरण सेवा ट्रस्ट, वैष्णोदेवी, कटरा	
5	पूज्य साध्वी वैष्णों मन्हास 65 वर्ष	माता मंदिर चौकी-चौरा	9419836530

केजरीवाल केवल वोटो की भाषा समझते है-संदीप

अखण्ड भारत मोर्चा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री संदीप आहूजा की अगुवाई हिन्दू एक महाशक्ति संस्था द्वारा पाकिस्तान से आये हिन्दू शरणार्थिओं के कैम्प में राहत सामग्री लेकर गये। ज्ञात रहे कि गत् 27 नवम्बर को इस शरणार्थी कैम्प मे आग लगने से 26 झुग्गियां जल कर खाक हो गई थी। इस अग्निकाण्ड में बिस्तर भी जल कर नष्ट हो गये थे। अखण्ड भारत मोर्चा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री संदीप आहूजा ने दिल्ली सरकार के असहयोगात्मक व्यवहार के प्रति रोष व्यक्त करते हुए कहा है कि एक सप्ताह से तीन सौ लोग ठंड मे खुले आसमान के नीचे सोने को मजबूर है सरकार ने शादी वाले शामियाने जो कि चारों ओर से खुले है लगा कर खानापूर्ति कर दी है। जबकि तीन सौ लोगो के लिए मात्र छः तम्बू लगाये गये है। यदि इन लोगों के वोट होते ओर ये एक वोट बैंक होते तो केजरीवाल सरकार का पूरा अमला इनकी सेवा मे लग जाता क्योंकि केजरीवाल सरकार को केवल वोटों की भाषा समझ आती है। इस बारे में एस.डी.एम सिविल लाईन श्री बी.के.झा से को फोन करके अपनी नराजगी जताई गई है ओर तम्बू लगाने की माँग की। श्री आहूजा ने बताया कि झुग्गियों के साथ ही इन लोगों के रुपये भी जल गये है इनको आर्थिक सहायता की भी शीघ्र अवश्यकता है। उन्होंने दिल्ली सरकार से मुआवजे की माँग की है।

अखण्ड भारत मोर्चा के श्री संदीप अहूजा ने बताया कि 26 परिवारों के लिए हिन्दू एकमहाशक्ति संस्था ने चालीस गद्दे ओर रजाई का इंतजाम शीघ्र किया ताकि आज की रात पीड़ित परिवार राहत की सांस ले सके। अलग-अलग पैकट करके आटा, चावल, रिफाईंड तेल, साबुन, चीनी इत्यादि समान भी अलग-अलग परिवार को दिया गया है जो कि पर्याप्त नही है। अभी ओर अधिक मदद की अवश्यकता है और अन्य संगठनों ने भी मदद का आश्वासन दिया है। राहत सामग्री वितरण करने मे हिन्दू एकमहाशक्ति के श्री विपिन खुराना, श्री नरेन्द्र यादव, श्री आनन्द ठाकुर, श्री संजय जैन, श्री हिमांशु, अखण्ड भारत मोर्चा के श्री पवन कौल, श्री शिवा ठाकुर, विश्व हिन्दू परिषद् के श्री महावीर प्रसाद, श्री ईश चड्डा आदि लोगों का सहयोग रहा।

प्रेषक : **राजश्री आहूजा**
(प्रचारमंत्री)

हिंदी का स्वाभिमान बचाने समाचार-पत्रों का शुभ संकल्प

-लोकेन्द्र सिंह

समाचार माध्यमों में अपनी अस्मिता की लड़ाई लड़ रही हिंदी के लिए सुखद अवसर है कि मध्यप्रदेश के हिंदी के समाचार-पत्रों ने हिंदी के स्वाभिमान की सुध ली है। कथित सरल हिंदी और बोलचाल की भाषा के नाम पर हिंदी समाचार पत्रों में अंग्रेजी शब्दों की अवैध घुसपैठ को रोकने का पवित्र संकल्प प्रदेश के प्रमुख समाचार पत्रों स्वदेश, नई दुनिया, दैनिक नई दुनिया, नवभारत, हरिभूमि, पीपुल्स समाचार, राज एक्सप्रेस, दबंग दुनिया, राष्ट्रीय हिन्दी मेल, अग्निबाण, न्यूज एक्सप्रेस-जबलपुर एक्सप्रेस समूह एवं उनकी न्यूज एजेन्सी ईएमएस और समय जगत ने लिया है। हिंदी का स्वाभिमान बचाने के इस आंदोलन का सूत्रधार स्वदेश समाचार पत्र बना है। स्वदेश के पवित्र संकल्प और आग्रह को स्वीकार कर इस आंदोलन में एक के बाद एक सभी प्रमुख समाचार पत्र आ रहे हैं। यह चिंता केवल स्वदेश की नहीं है, बल्कि अपनी भाषा को बचाने का कर्तव्य सबका है। अब यह संकल्प प्रत्येक समाचार पत्र को स्वयं ही आगे ले जाना होगा। स्वदेश मात्र उत्प्रेरक की भूमिका में है। इस शुभ संकल्प का बीजारोपण 6 नवम्बर को भोपाल के रवीन्द्र भवन में स्वदेश के स्वर्ण जयंती समारोह के अवसर पर हुआ। 'हिन्दी समाचार माध्यमों में भाषा की चुनौती' विषय राष्ट्रीय विमर्श में विद्वानों ने हिंदी को विद्रूप करने के षडङंत्र और उसके खतरों की ओर जब स्पष्ट संकेत किया तब मध्यप्रदेश के उक्त समाचार पत्रों ने हिंदी की अस्मिता के लिए उठकर खड़ा होने का यह संकल्प लिया। हिंदी समाचार पत्रों का यह संकल्प ऐतिहासिक और अनुकरणीय है। बड़े पत्रकारिता संस्थान, जो लगभग कारोबारी समूहों में बदल चुके हैं, उन्हें भी राष्ट्रीय, सामाजिक और सांस्कृतिक महत्त्व के इस आंदोलन को स्वीकार करना चाहिए। यह हमारी पहचान से जुड़ा मुद्दा भी है।

यह सर्वविधित है कि हिंदी के समाचार माध्यमों में अंग्रेजी शब्दों का बढ़ता प्रयोग भारतीय मानस के लिए चिंता का विषय बन गया है। विशेषकर, हिंदी समाचार

पत्रों में अंग्रेजी के शब्दों का चलन अधिक गंभीर समस्या है। हमें नहीं भूलना चाहिए कि हिंदी समाचार पत्रों की भाषा से नवयुवक अपनी भाषा सुधारते थे। समाचार पत्र सूचना और अध्ययन सामग्री देने के साथ-साथ समाज को भाषा का संस्कार भी देते थे। कोई शब्द शुद्ध है या अशुद्ध, जब यह प्रश्न खड़ा होता था, तब समाचार पत्रों के पन्नों में देखा जाता था कि वह कैसे लिखा गया है? आज स्थिति यह नहीं है। सामान्य व्यक्ति के अंतर्मन में यह बात गहरे बैठ गई है कि समाचार पत्र शुद्ध भाषा उपयोग नहीं कर रहे हैं। समाचार पत्रों में भाषा का घालमेल है। पाठकों की इस धारणा को 'विश्वसनीयता का संकट' मानकर समाचार माध्यमों को गंभीरता से चिंतन-मंथन करने की आवश्यकता है। हमें यह आत्ममुग्धता छोडनी होगी कि हम पाठकों की सुविधा के लिए आम बोलचाल की भाषा का उपयोग करते हैं। अखबार को पठनीय बनाते हैं। सरल भाषा में खबर लिखते हैं ताकि सामान्य जन को समझ आ सके। भले ही हम न माने, लेकिन सच यह है कि सामान्य जन अपेक्षा कर रहा है कि हम सम्यक भाषा का उपयोग करें। हिंदी में खबर लिखें, 'हिंग्लिश' में नहीं। आज हम कोई भी हिंदी का समाचार पत्र उठाकर देखें, शीर्षक से लेकर खबर की अंतिम पंक्ति तक अंग्रेजी शब्दों की घुसपैठ पाते हैं। हालांकि इसे अंग्रेजी शब्दों की घुसपैठ कहना ठीक नहीं, यह शब्द अपने आप नहीं आए, हमने इन्हें माथे पर बिठाया है। दरअसल, हम औपनिवेशिक मानसिकता के शिकार हैं। हम यह मान बैठे हैं कि यह देश अंग्रेजी के शब्दों को आसानी से समझता है, अपनी मातृभाषा को ठीक से नहीं पहचानता है। कुछ समाचार पत्रों के मालिकों की यह दलील एक बार मान भी लें कि भारत

की संतति अपनी हिंदी को ठीक से नहीं देख पा रही है। अब यहाँ सवाल है कि उसे हिंदी के विराट स्वरूप से परिचित कराने का दायित्व किसका है? आज अखबारों का जिस तरह का चरित्र हो गया है, उससे तो भारत का सामान्य आदमी अपनी भाषा भूलेगा ही? इसलिए मध्यप्रदेश के प्रमुख समाचार पत्र जब यह शुभ संकल्प ले रहे हैं कि वे अंग्रेजी के शब्दों को बाहर का रास्ता दिखाएंगे, तब सकारात्मक बदलाव की एक आहट सुनाई देती है। अंग्रेजी के महिमामंडन और अपनी अनदेखी से दु:खी होकर एक कोने में खुद को समेटकर बैठी हिंदी थोड़ा मुस्काई है। उसे भरोसा है कि उसके हिंदी पुत्र अब उसका मान बढ़ाएंगे। औपनिवेशिक मानसिकता की बाढ़ में बहकर आई अंग्रेजी शब्दों के अपशिष्ट को उसके आँचल से हटाएंगे। उम्मीद है कि प्रदेश के ये समाचार पत्र अपने संकल्प पर अडिग रहेंगे। उक्त सभी समाचार पत्रों ने यदि ईमानदारी से अपने संकल्प को निभाने का प्रयास किया, तब निश्चय ही सकारात्मक बदलाव संभव है और उनका यह प्रयास पत्रकारिता के इतिहास में स्वर्णाक्षरों में लिखा जाएगा। हिंदी जगत में भी आदरभाव के साथ इस संकल्प का सदैव स्मरण किया जाएगा। इस सबके बावजूद हिंदी समाचार पत्रों का यह प्राथमिक कर्तव्य है कि वह अपनी आत्मभाषा के संवाहक बनें।

'स्वदेश' की राष्ट्रहित की पत्रकारिता को 50 वर्ष पूर्ण होने पर उसके प्रधान संपादक राजेन्द्र शर्मा कहते हैं- 'स्वदेश ने राष्ट्रभाषा की रक्षा में एक पहल करने की कोशिश की है, जिसे सब ओर से उत्साहित समर्थन प्राप्त हो रहा है। बल्कि यह कहना अधिक उचित होगा कि उसके संकल्प को हिंदी पत्रकारिता ने अपना संकल्प बना लिया है। इस पहल की फलश्रुति यह है कि अब हिंदी की अस्मिता पर हो रहे वीभत्स आक्रमण का सामना करने की चुनौती हिन्दी के समाचार-पत्रों और अन्य माध्यमों ने स्वयं स्वीकार करने का निर्णय किया है। हिंदी और देश की चिंता बढ़ाने की वर्तमान स्थिति को बदलने के लिए भोपाल के प्रमुख समाचार पत्रों ने जो प्रतिबद्धता प्रकट की, वह आनंदित करने वाली है।' उन्होंने बताया कि इस आयोजन के पहले 'स्वदेश' की ओर से भोपाल से प्रकाशित होने वाले कुछ समाचार पत्र समूहों के संचालकों और संपादकों से चर्चा कर उनसे निवेदन किया गया था कि, अब समय आ गया है कि जब हिंदी के समाचार-पत्र ही, अपनी मातृभाषा और राष्ट्रभाषा की रक्षा के लिए एकजुट होकर खड़े हों और साफ-सुथरी और जन सामान्य के लिए बोधगम्य हिंदी को बचाने और बनाए रखने की मुहिम में जुट जाएं। हिन्दी समाचार पत्रों में अंग्रेजी के शब्दों का अविवेकपूर्ण और फूहड़ ढंग से होने वाला उपयोग, हिंदी के कथित बड़े समाचार पत्रों की ऐसी शर्मनाक दुर्गति कर रहा है कि उन्हें हिंदी का समाचार पत्र कहना या मानना भी अनुचित प्रतीत होता है। कुछ समाचार पत्र तो इस काम को पूरी तरह सोच विचार कर, एक स्पष्ट उद्देश्य के साथ अंजाम दे रहे हैं, किन्तु अधिकांश केवल देखा-देखी में ही, बिना विचारे ही इसके शिकार हो रहे हैं। 'स्वदेश' ने उन सबको टटोला तो सबके मन में पीड़ा थी, वे स्थिति को बदलने को आतुर थे-इसलिये जब उनके सामने यह विचार रखा कि वे अपने समाचार-पत्र की वाणिज्यिक रणनीति 'हिंदी' के आधार पर बनाएं और ऐसी साफ-सुथरी हिन्दी लेकर पाठकों के पास जाएं कि उनका समाचार पत्र बच्चों को सही हिंदी का ज्ञान देगा, उनकी भाषा बिगाड़ेगा नहीं। उनके बच्चों और हिंदी के भविष्य के साथ खिलवाड़ नहीं करेगा। श्री शर्मा ने बताया-'हमें यह कहते हुए प्रसन्नता है कि अपने प्रारंभिक दौर में हमने जिनसे भी संपर्क किया, उनमें से किसी ने भी असहमति प्रकट नहीं की। इस पवित्र संकल्प के लिए इन सबका अभिनंदन और अभिवादन। परन्तु यह संख्या यहीं रुकने वाली नहीं है, हर हिंदी समाचार पत्र इस पवित्र यज्ञ में अपनी आहुति समर्पित करने के लिये तत्पर रहेगा, इसमें कोई संदेह नहीं। हम सबसे अनुरोध करेंगे।'

'हिन्दी समाचार माध्यमों में भाषा की चुनौती' विषय पर राष्ट्रीय विमर्श में केंद्रीय मंत्री नरेन्द्र सिंह तोमर, वरिष्ठ साहित्यकार एवं अक्षरा के संपादक कैलाशचंद्र पंत (भोपाल), वरिष्ठ पत्रकार प्रभु जोशी (इंदौर), अटल बिहारी वाजपेयी हिंदी विश्वविद्यालय के कुलपति मोहनलाल छीपा (भोपाल), इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र के सदस्य सचिव डॉ. सच्चिदानंद जोशी (नई दिल्ली), संस्कृति विभाग मध्यप्रदेश के प्रमुख सचिव मनोज

श्रीवास्तव (भोपाल), मध्यप्रदेश राष्ट्रीय एकता समिति के उपाध्यक्ष रमेश शर्मा (भोपाल) और देवपुत्र पत्रिका के प्रधान संपादक कृष्ण कुमार अस्थाना ने अपने उद्‌बोधन में हिंदी की वर्तमान दशा की ओर संकेत करने के साथ-साथ उसे बाजारवाद के षड्‌यंत्र से बाहर निकालने का मार्ग भी प्रशस्त किया। यदि सबके मंतव्य को सामूहिक रूप से व्यक्त करना हो, तब कवि दुष्यंत के भाव और शब्द उधार लेने होंगे। सब विद्वानों का मत था- 'हो गई है पीर पर्वत-सी पिघलनी चाहिए, इस हिमालय से कोई गंगा निकलनी चाहिए।' प्रदेश के हिंदी समाचार पत्रों का यह शुभ संकल्प ऐसा ही भगीरथी प्रयास है, जिससे गंगा का प्रवाह संभव है।

समाचार माध्यमों में हिंदी का स्वरूप बिगाडने के लिए राष्ट्रीय एकता समिति के उपाध्यक्ष रमेश शर्मा ने मार्क्स के पुत्रों को जिम्मेदार ठहराया। उन्होंने कहा कि जिन दिनों दुनिया में मार्क्स का बोलबाला था, तब भी स्वयं मार्क्स का मानना था कि भारत की समाज रचना ऐसी है कि यहां वर्ग संघर्ष की स्थिति नहीं है, यहां अगर कभी संघर्ष होगा तो जाति और भाषाई आधार पर होगा। मार्क्सवादियों ने 1942 में अंग्रेजों का साथ दिया और स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद योजनापूर्वक समाचारपत्रों में आ गए। वे जानते हैं कि समाचारपत्र केवल संवाद प्रक्षेपण का ही साधन नहीं है, बल्कि जनमत भी बनाते हैं। इसलिए उन्होंने योजनाबद्ध ढंग से भारतीय भाषाओं पर हमला करना शुरू किया। इनका मूल उद्देश्य भारतीय संस्कृति पर हमला करना है। उन्होंने ध्यान दिलाया कि आजादी की लड़ाई में सबसे ज्यादा महत्त्वपूर्ण योगदान जिन तत्कालीन समाचार पत्रों का रहा था, आज वे सब बंद हो चुके हैं। लेकिन आजादी के पूर्व जितने भी अंग्रेजों के समर्थक समाचार पत्र थे, वे आज भी चल रहे हैं तथा स्वतंत्र भारत में अंग्रेजियत लाने की मुहिम जारी रखे हुए हैं। वहीं, इंदिरा गांधी कला केन्द्र सदस्य सचिव डॉ. सच्चिदानंद जोशी ने अपने वक्तव्य में हिंदी के अनन्य सेवक माधवराव सप्रे द्वारा 1906 से 1908 के बीच लिखे गए लेखों को पढने की सलाह श्रोताओं को दी। उन्होंने कहा कि उस समय भाषा को लेकर सप्रेजी की चिंता भी वैसी ही थी, जैसी आज हम सबकी है। जोशी ने कहा कि संचार माध्यमों से हमारी अपेक्षा तो ठीक है, किन्तु समाज में भी अच्छी भाषा का वातावरण बनाना चाहिए। समाज ही परिवर्तन ला सकता है। आज मोबाइल और इंटरनेट के माध्यम से स्लेग लेंग्वेज एवं शॉर्ट कट भाषा का प्रयोग बढ़ रहा है। यह समाज की भाषा बन गई, फिर क्या होगा? समाज की भाषा में सुधार लाए बिना मीडिया की भाषा में सुधार संभव नहीं है।

आज हिंदी में अंग्रेजी शब्दों के बढ़ते प्रचलन के लिए संस्कृति विभाग के सचिव एवं साहित्यकार मनोज श्रीवास्तव ने अमेरिका के प्रभाव को प्रमुख कारण बताया। उन्होंने कहा कि आज हिन्दी में अंग्रेजी का बढ़ता प्रचलन गुलामी के कारण नहीं, बल्कि अमरीकी प्रभाव के कारण है। आर्थिक पूंजीवाद ने भाषाई परिवर्तन किए हैं। अब खिचडी भाषा भी नहीं, बल्कि चटनी भाषा बन रही है। वहीं, हिन्दी विश्वविद्यालय के कुलपति मोहनलाल छीपा ने समाज से आग्रह किया कि भाषाई गड़बड़ी करने वाले समाचार पत्रों का बहिष्कार किया जाना चाहिए। यकीनन यह एक महत्त्वपूर्ण कदम होगा। समाज की आड़ लेकर हिंदी में अनावश्यक अंग्रेजी के शब्दों को ठूंसने वाले समाचार पत्रों को आईना दिखाने का काम समाज ही बखूबी कर सकता है। समाज की यह जिम्मेदारी है कि वह अखबारों को बताए कि उसे किस प्रकार की भाषा और किस प्रकार की सामग्री चाहिए। हिंदी में हो रहे घालमेल पर यदि पाठक अंगुली उठाने लगेगा, तब प्रत्येक समाचार पत्र अपनी भाषा ठीक करने के लिए मजबूर हो जाएगा। यदि डॉ. जोशी और श्री छीपा के आग्रह को समाज स्वीकार कर ले तब उक्त समाचार पत्रों को बड़ा सहयोग मिलेगा, जिन्होंने हिंदी को बचाने का संकल्प लिया है। इस राष्ट्रीय विमर्श में वरिष्ठ पत्रकार एवं साहित्यकार प्रभु जोशी ने विचारोत्तेजक उद्‌बोधन प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि सच्चाई यह है कि हम हिन्दी बोलने वालों ने ही हिन्दी की हत्या की सुपारी ली हुई है। अंग्रेजी का व्यवसाय अब इंग्लैंड नहीं, बल्कि अमेरिका और डब्लूटीओ कर रहा है। जब कोई गुलाम बनने को आतुर हो, तो फिर युद्ध पोतों की क्या आवश्यकता? उन्होंने ध्यान दिलाया कि परिवर्तन सत्ता केंद्रित होते हैं। कांग्रेस शासन ने एक सर्कुलर जारी किया था, जिसमें

कहा गया था कि हिंदी को सरल बनाने के लिए उसमें अंग्रेजी शब्द शामिल किए जाएं। उस सर्कुलर के कारण हिंग्लिश का प्रचलन बढ़ा। उन्होंने कहा कि आज ऐसी स्थिति बन गई है कि भाषा की शुद्धता की नहीं, बल्कि भाषा को बचाने की बात प्राथमिक है। क्या आप जानते हैं कि बीसवीं सदी में सारी अफ्रीकी भाषाएं नष्ट कर दी गईं। हमारे यहां भी भाषा का व्याकरण खत्म कर उसे लूली लंगडी बनाने का षड्यंत्र चल रहा है। भाषा पर अंतिम हमला एफडीआई ने किया है, उसकी शर्त है, हिंदी को रोमन बनाना। इसलिए जिन अखबारों ने एफडीआई लिया है, वे हिन्दी की बात सुनेंगे ही नहीं। यह सांस्कृतिक आदान-प्रदान का नहीं, बल्कि सांस्कृतिक अपहरण का युग है। राष्ट्रीय विमर्श में हिंदी जगत के प्रमुख हस्ताक्षर कैलाशचंद्र पंत ने कहा कि इस समय स्पष्टतरू दो धाराएं चल रही हैं, एक है जिसे राष्ट्रवादी कहा जाता है, किन्तु मैं उसे सांस्कृतिक धारा कहता हूं और दूसरी है आयातित गौरांग महाप्रभु धारा, जो गोरी चमड़ी के प्रति आसक्त होती है। आजादी के पूर्व इस धारा के प्रतिनिधि राजा राममोहन राय ने तो एक बार कहा भी था कि अंग्रेजों का आना भारत के हित में है। किन्तु इसके विपरीत उस समय सांस्कृतिक पहचान की दूसरी धारा भी प्रवाहित होती रही। बंगाल के केशव चन्द्र सेन ने गुजरात के स्वामी दयानंद सरस्वती से आग्रह किया कि वे अपने प्रवचन संस्कृत के स्थान पर हिंदी में दें। लोकमान्य तिलक ने महाराष्ट्र के बुद्धिजीवियों की एक बैठक बुलाई और प्रश्न किया-कोई राष्ट्रभाषा होनी चाहिए, अथवा नहीं? और हो तो कौन-सी हो? सर्वसम्मत स्वर आया कि राष्ट्रभाषा अनिवार्य और वह केवल हिंदी ही हो सकती है। उन्होंने बताया कि हिंदी के लिए समर्पित पत्रकारों महावीर प्रसाद द्विवेदी, माखनलाल चतुर्वेदी, मैथिलीशरण गुप्त, बालकृष्ण शर्मा नवीन और गणेश शंकर विद्यार्थी का उल्लेख करते हुए कहा कि इन सबके सामने राष्ट्र की सही तस्वीर थी। आज कुछ समाचार पत्रों द्वारा तो हिंदी से बलात्कार किया जा रहा है। सांस्कृतिक पहचान को मिटाने का प्रयत्न होता रहा है।

बहरहाल, यहाँ यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगा कि हिंदी के समाचार पत्रों के सम्मुख न केवल हिंदी के स्वाभिमान का प्रश्न है, बल्कि समूचे देश की सांस्कृतिक पहचान का भी प्रश्न खड़ा है। मध्यप्रदेश के हिंदी समाचार पत्रों ने अपनी भाषा को बचाने और उसे समृद्ध करने का जो संकल्प लिया है, उसके साथ अन्य अस्मिताओं के प्रश्न भी जुड़े हुए हैं। इसलिए इस संकल्प को सभी संस्थानों को अपने समाचार पत्रों के पन्नों पर उतारना होगा। कहते हैं कि शुभ संकल्पों को पूरा करने में प्रकृति भी सहायक सिद्ध होती है। इसलिए भरोसा किया जा सकता है कि हिंदी के स्वाभिमान के इस यज्ञ में सभी समाचार पत्रों की पवित्र आहुतियाँ भाषाई और सांस्कृतिक वातावरण को स्वच्छ करेंगी।

(लेखक माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय में कार्यरत हैं।)

.....पृष्ठ 5 का शेष

प्रश्नों पर नि:शुल्क सलाह दी जायेगी और वह भी देश भर के जाने माने सी ए (चार्टर्ड एकाउंटेंट्स)द्वारा। इस सलाह मदद के लिए भी हिन्दू हेल्प लाइन के राष्ट्रीय कॉल सेण्टर पर/ईमेल पर संपर्क करें।

डॉ तोगड़िया ने आगे कहा, 'देश के हिन्दू अनेकों इमरजेंसी समस्याओं से जूझ रहे है। हिन्दू हेल्प लाइन उनके साथ उनके मित्र के नाते हमेशा खड़ा रहा और रहेगा।'

बैठक में हिन्दू हेप लाइन के राष्ट्रीय अध्यक्ष सी ए श्री रणजीत नातू जी, इंडिया हेल्थ लाइन के डॉ सारडा, डॉ तुली, मथुरा मेडिकल कॉलेज के संस्थापक श्री किशन चौधरी जी और जाने माने वस्त्र उद्योजक श्री दिनेश अग्रवाल जी उपिस्थित थे।

Contact: Dr Pravin Togadia
www-twitter-com/DrPravinTogadia;
www-facebook-com/togadia
Hindu Help Line: National Call Center: 020-66803300
and 075886 82181
Email: contacthhl@gmail-com
www-facebook-com/pages/
HHL-Hindi-Help-Line/133768866769l0

देश के साथ राजनैतिक पार्टियाँ भी कैशलेस बने, डिजिटल बने

-**रिखब चन्द जैन**, अध्यक्ष - भारतीय मतदाता संगठन

सारा देश कैशलेस हो रहा है। डिजिटल हो रहा है। राजनैतिक पार्टियां भी कैशलैस हो, ट्रांस्पेरेन्ट हो, डिजिटल हो। प्रधानमंत्री जी ने देश को सन्देश दिया "कैशलेस बनो"। डिजिटल कारोबार करें। नोटों का प्रयोग कम से कम करें। इस नई दिशा से, उनके प्रयासों से उम्मीद है कि देश में भ्रष्टाचार, धनबल, बाहुबल, आतंकवाद, अतिवाद घट सकेगा। राष्ट्र एक नये प्रवेश में स्वच्छता के साथ व्यापार, व्यवहार, ट्रांजेक्शन कर पायेगा। पैरलल इकनॉमी, दो नम्बर का धन्धा, दस नम्बर का धन्धा बन्द नहीं तो कम से कम काफी हद तक कम अवश्य होगा।

अगर राजनीति स्वच्छ होगी तो देश स्वच्छ होगा। शासन स्वच्छ होगा। प्रबन्ध स्वच्छ होगा। जो बात जनता के लिए कही जा रही है, नागरिकों के लिए कही जा रही है वो सबसे पहले राजनैतिक पार्टियों पर भी लागू होनी चाहिए। राजनैतिक पार्टियां कोई भी डोनेशन ले उसका पूरा ब्यौरा पब्लिक को बताना चाहिए, पूरा हिसाब इलैक्शन कमीशन को और सी.ए. जी को देना चाहिए। पार्टियां इन्टरनल डेमोक्रेसी को व्यवहार में लायें। पार्टियां वांछित और योग्य व्यक्ति ही राष्ट्रहित में प्रतिनिधियों का चयन करे। न कि दल हित में या व्यक्तिगत स्वार्थ के लिए। जब पार्टियों पर लगाम लगेगी, रेगुलेटरी से वर्क होगा, आर.टी.आई पर कवरिंग होगी, जनता को उनके कार्यों में पारदर्शिता दिखेगी, पूरा ब्यौरा समय-समय पर मिलता रहेगा, सारे डोनेशन सिर्फ चैक के माध्यम से होगें, ऑनलाईन लेगें, न कि नगद लेगें और पांच हजार से ज्यादा डोनेशन देने वालों के नाम और पत्ते सूचनार्थ उनकी रिपोर्ट में प्रकाशित होने चाहिए। ऐसा ग्रेट ब्रिटेन और स्विट्जरलैंड तथा अनेकों देशों में हो रहा है। वहाँ जो लोकतन्त्र है उसमें ऐसा नियम पहले से लागू हैं। भारत का बड़ा लोकतन्त्र में ऐसा करना अब बदले हुए परिवेश में समय के साथ अति आवश्यक हो गया है।

राजनैतिक पार्टियों के सुशासन के प्रयास से ही देश के विकास को गति मिलेगी। गरीबी, भुखमरी, अशिक्षा, तंगी, महंगाई, दुराचार, भ्रष्टाचार, असुरक्षा, डर आदि दूर होगें। इसके लिए हमारी पार्टियों के कर्णधार एवं मतदाता ऐसे सही प्रत्याशी ही चुने। इसके लिए मतदाताओं को शिक्षण, प्रशिक्षण, इंर्फोमेशन, एज्युकेशन नॉलेज पूरी मिले।

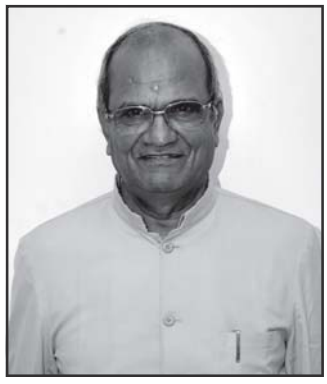

मतदाता सक्रिय होकर, ऐसा समझ करके कि उनकों वोट देना कम्पलसरी है, उनका कर्त्तव्य है, बिना वोट दिये कोई भी न रहे। यह उनका अधिकार है। वोट अवश्य दें। सोच-समझ करके वोट दें। कोई भी मतदाता अपना वोट बेचे नहीं। मतदाता बिना धर्म, जाति, लिंग भेद के, रंगभेद के, क्षेत्रीय भावना से ऊपर उठकर योग्यता के आधार पर और पार्टी की घोषित योजना के आधार पर व्यक्ति का चयन करे। कोई भी अपराधी वर्ग का व्यक्ति पहले तो चुनाव में बाधित हो, चुनाव लड़ ना सके और पार्टियां ऐसे व्यक्तियों को, घोटालेंबाजों को, गलत लोगों को टिकट ना दे, ना बेचें, टिकट के लिए वोट ना खरीदें, वोट बैंक ना चलाये।

प्रतिपक्ष के रूप में बिना मतलब व्यक्तिगत या दलगत रंजिश और विपक्षता के लिए किसी सही बात पर अड़चन ना लगायें। सही मुद्दें पर तथ्यों के साथ वैकल्पिक रास्ते बताते हुए ही सिर्फ विपक्षता करनी चाहिए। राजनैतिक और चुनाव सुधारों के द्वारा ही इस देश में, विकास में, गरीबी के उन्मूलन में, जातिवाद के दुष्परिणामों से छुटकारा मिल सकेगा। धर्म व्यक्तिगत चीज है उसे समाज के लिए, देश के सम्बन्ध में बीच में लाने की, उसके आधार पर भेदभाव करने की आवश्यकत बिल्कुल ही नहीं है। बल्कि ऐसा करना गलत भी है।

चुनाव आयुक्त श्री नसीम जैदी ने 47 नये नियमों का चुनाव सुधार प्रस्ताव कानून मंत्रालय को भेजा है। वोटर की घूस देने पर चुनाव रद्द होगा। श्री जैदी ने राजनीति में अपराधिकरण खत्म करने, कालेधन के इस्तेमाल को

समाप्त करने, फन्डिंग को पारदर्शी बनाना, पेड न्यूज को आपराधिक श्रेणी में डालने और मतदाताओं का रिश्वत देने जैस मामलों को आपराधिक श्रेणी में डालने की मांग की है। आयोग ने रिश्वतखोरी, पैसे के गलत इस्तेमाल और बूथ कैपचरिंग जैसे मामले पाये जाने पर चुनावों को अमान्य घोषित करने की पार्वस की मांग की है। भारतीय मतदाता संगठन चुनाव आयोग की इस पहल की अनुमोदना करते हुए स्वागत भी करता है।

भारतीय मतदाता संगठन के सभी कार्यकर्ता इसी प्रयास में लगे है। निष्ठा से, स्वयंसेवा के रूप में, मतदाताओं को वोट देने के लिए प्रेरित करने मतदाता मित्रों के गठन के द्वारा उनके माध्यम से पोलिंग प्रतिशत 90 से 95 प्रतिशत तक ले जाने का प्रयास कर रही है। दूसरी तरफ जनप्रतिनिधियों के लिए अच्छे लोगों का रास्ता खुले, गलत अपराधिक, घोटालेबाज, स्वार्थी धन्धा, व्यापार समझनें वाले राजनीतिकों के लिए सत्ता का रास्ता बाधित करने वो सत्ता में ना आये, जनप्रतिनिधि ना बने इसके लिए प्रयासरत् है।

भारतीय मतदाता संगठन गैरराजनीतिक एक विचार मंच है। अपने विचारों से मतदाताओं को और शासन, जनप्रतिनिधियों को, राजनीतिज्ञों को अवगत कराना और उन पर सजग नागरिकता के साथ प्रबुद्ध नागरिकों के द्वारा सरकार में, प्रशासन में, विधायिका में सही बात करने के लिए जल्दी करवाना, गलत बातों को जल्दी से बन्द करवाना यही भारतीय मतदाता का उद्देश्य है। सम्पूर्ण रूप से सिर्फ अहिंसात्मक रास्तों से, वार्ता के द्वारा, विचारमंच के द्वारा, आपस में बातचीत के द्वारा समस्याओं का समाधान करना इसका लक्ष्य है। हड़ताल, आक्रोश प्रदर्शन, धरना बन्ध आदि माध्यमों की भारतीय मतदाता संगठन अनुमोदना नहीं करता है। इन सब माध्यमों से प्रतिरोध जाहिर तो किया जाता है लेकिन उसका कोई फल नहीं मिल पाता है। सुनवाई कोई नहीं होती है। उसका कोई असर नहीं पड़ता है। इसलिए ऐसे माध्यमों की बजाय भारतीय मतदाता संगठन सिर्फ और सिर्फ नागरिकों को सजग करने का कार्य करता है। प्रबुद्ध नागरिकों को एक्टिवेट करना है और "इनडिफ्रेन्स एटिट्यूड" को खत्म करने का प्रयास करता है।

जब नागरिक सजग होगें तो ही लोकतन्त्र जीवित रहेगा। तभी लोकतन्त्र विकसित होगा। सजग नागरिक अगर निष्क्रिय होकर बैठते है तो यह लोकतन्त्र के लिए सबसे बड़ा अभिशाप है। इसे धनबल और बाहुबल के माध्यम से अपराधी वर्ग को, गलत तरह के लोगों को सत्ता में आने के लिए और उसे काबिज करने के लिए अवसर मिल जाता है। नागरिक सजगता ही राष्ट्र की रक्षा करने के लिए लोकतन्त्र का पाँचवा स्तम्भ है। मीडिया के बाद में यही लोकतन्त्र का पाँचवा स्तम्भ है और इसी पर भविष्य में देश का, लोकतन्त्र का विकास निर्भर होगा।

भारतीय मतदाता संगठन
मो.: 9810279446
E-mail: rikhabchandjaintt@gmail.com

मशहूर दरगाह में प्रवेश के लिए लड़ी थी लंबी कानूनी लड़ाई हाजी अली के मजार कक्ष तक पहुंचीं महिलाएं

मुंबई। करीब साढ़े चार साल बाद महिलाओं के एक समूह ने मंगलवार को हाजी अली दरगाह के मजार कक्ष के अंदर प्रवेश किया। महिलाओं ने मुस्लिम संत सैयद हाजी अली पीर के मजार पर दो मीटर दूर से ही चादर और ूल चढ़ाकर प्रार्थना की। नई व्यवस्था के अनुसार अब स्त्री-पुरुष सभी श्रद्धालु दो मीटर दूर से ही हाजी अली के दर्शन कर सकेंगे। 1 भारतीय मुस्लिम महिला आंदोलन (बीएमएमए) की सह संस्थापक नूरजहां एस. नियाज के साथ करीब 80 महिलाओं ने दोपहर बाद तीन बजे दरगाह में प्रवेश कर हाजी अली के दर्शन किए। महिलाओं का हाजी अली दरगाह में मजार तक पहले भी प्रवेश होता था।

-दै0जागरण

ग्रेट ब्रिटेन के पूर्व चुनाव आयुक्त भारतीय मतदाता संगठन से मिले।

-डॉ. रिखब चन्द जैन

श्री करमजीत सिंह जी ने अपने भारत प्रवास में भारतीय मतदाता संगठन के पदाधिकारियों एवं कार्यकताओं से मुलाकात की और ग्रेट ब्रिटेन तथा भारत के चुनाव प्रणाली एवं चुनाव सुधार के विषय पर खुल कर बातचीत हुई। 250 वर्षों तक अंग्रेजों ने भारत में राजाओं को गद्दी पर बिठाने का काम किया तथा उनके उत्तराधिकारी तय करने का काम किया। उसी देश के भारतवंशी श्री करमजीत सिंह जी ने 10 वर्षों तक इंग्लैंड के निर्वाचित लोगों की जीत की घोषणायें की। पंजाबी में अपनी बात रखते हुए श्री करमजीत सिंह जी ने भारतीय चुनाव आयोग, चुनाव पद्धति और लोकतान्त्रिक मूल्यों की खुले मन से प्रशंसा की और बताया कि यह सब ग्रेट ब्रिटेन ही नहीं अनेक देशों के लिए उदाहरण और प्रेरणादायक है। उन्होंने स्टेट फंडिंग, चुनाव में धन बल, बाहुबल के प्रभाव को हटाने और कम्पलसरी वोटिंग आदि पर अपने विचार रखे। ग्रेट ब्रिटेन में राजनैतिक पार्टियां सिर्फ चैक से ही डोनशन लेती है एवं पूर्ण पारदर्शिता के साथ ही तिमाही उन्हें पूरा ब्यौरा दान दाताओं का, चुनाव आयोग में

देना होता है।

श्री रमाकान्त जी गोस्वामी (पूर्व मंत्री, दिल्ली सरकार), श्री मांगेराम जी गर्ग (पूर्व प्रदेश अध्यक्ष, भाजपा) ने उनका स्वागत किया। श्री रिखब चन्द जैन (संगठन प्रमुख, भारतीय मतदाता संगठन) ने शॉल भेंट किया तथा श्री विमल वधावन योगाचार्य (महामंत्री, भारतीय मतदाता संगठन) ने फूलों का गुलदस्ता देकर श्री करमजीत सिंह जी का स्वागत किया। श्री राजेन्द्र गोस्वामी ने उन्हें भारतीय मतदाता संगठन के प्रकाशन प्रस्तुत किये।

अध्यक्ष, भारतीय मतदाता संगठन

पाकिस्तान के इतिहास में पहली बार गैरकानूनी होगा किसी हिंदू को जबरन मुसलमान बनाना

पाकिस्तान के सिंध प्रांत की सरकार ने 24 नवंबर को नया कानून बनाकर राज्य में जबरन धर्मपरिवर्तन कराने को दंडनीय अपराध घोषित कर दिया है जिसे सभी दलों ने समर्थन किया। पाक में अल्पसंख्यकों के जबरिया धर्मपरिवर्तन के मामले अक्सर सामने आते रहते हैं लेकिन पाकिस्तानी इतिहास में ऐसा पहली बार हुआ है कि देश के किसी राज्य में इसे दंडनीय अपराध की श्रेणी में शामिल किया गया है। नए कानून के अनुसार जबरन धर्मपरिवर्तन कराने का दोषी पाए जाने पर पांच साल से आजीवन कारावास तक की सजा हो सकती है। इसके अलावा दोषी को पीडितों को आर्थिक जुर्माना भी देना होगा। नए कानून के अनुसार जरबन धर्मपरिवर्तन कराए गए शख्स की शादी कराने वाले व्यक्ति को भी तीन साल की सजा और जुर्माना हो सकता है। नए कानून के अनुसार नाबालिगों के धर्मपरिवर्तन को पूरी तरह गैर-कानूनी घोषित किया गया है। नए कानून के अनुसार धर्मपरिवर्तन करने वाले व्यक्ति को 21 दिन पहले इसकी सूचना देनी होगी। सिंध विधानसभा में ये विधेयक पाक मुस्लिम लीग के हिंदू विधायक नंद कुमार गोकलानी ने 2015 में पेश किया था। पाक में करीब 20 लाख हिंदू आबादी है। हिंदुओं के अलावा पाकिस्तान में सिख, बौद्ध, ईसाई, बहाई, अहमदिया इत्यादि धर्म के भी अल्पसंख्यक हैं।

जनसत्ता

विपक्षीय विरोध के ढीले कलपुर्जे

-अर्पण जैन 'अविचल'

घर से चौराहे तक, गली से गलियारे तक, झोपड़ी से महलों तक, किसान से कुबेर तक, संसद से सड़क तक, सत्ता की चकाचौंध के बीच चूल्हे की अधजली लकड़ियाँ, एक अदद किसान के घर पर रखे गर्म तवे से उठने वाली भाषा का विलाप, बैंक के एटीएम के बाहर लाइन में खड़े बुजुर्ग की उबकाई लेती अनुभव की किताब और न जाने तमाम संकीर्ण पहलुओं के बीच आज एक ही नाम की गूँज उठना, संयोग से आजादी के बाद तीसरे गुजराती की पारी की शुरुआत है।

भारत कोई भूमि का टुकड़ा नहीं, बल्कि एक संपूर्ण प्रभुतासंपन्न, समाजवादी, धर्मनिरपेक्ष, लोकतांत्रिक गणराज्य है। इसमें संसदीय प्रणाली की सरकार है और गणराज्य उस संविधान की व्यवस्थाओं के अनुसार प्रशासित होता है जो 26 नवंबर, 1949 को संविधान सभा द्वारा स्वीकृत किया गया और 26 जनवरी, 1950 को लागू हुआ।

किसी लोकतंत्र में जनता के लिए जनता द्वारा ही चुनी हुई सरकार चलाने के मायने हैं। कभी बहुमत तो कभी अल्पमत में जोड़-तोड़ वाले गठबंधन से, जिसे भी जनादेश मिलता है, सच्चे अर्थों में लोकतंत्र में वही सत्ता का अधिकारी होता है और उस जनादेश प्राप्त सरकार पर भी नजरें लगाए बैठने के लिए बतौर जनता के हितैषी विपक्ष को माना जाता है।

विधायिका में विपक्ष के नेता के पद का अत्यधिक सार्वजनिक महत्त्व है। इसका महत्त्व संसदीय लोकतंत्र में विपक्ष को दी गई मुख्य भूमिका से उद्धत होता है। विपक्ष के नेता का कार्य वस्तुत: अत्यधिक कठिन है क्योंकि उन्हें आलोचना करनी पड़ती है, गलती इंगित करनी पड़ती है और ऐसे वैकल्पिक प्रस्तावों-नीतियों को प्रस्तुत करना पड़ता है जिन्हें लागू करने का उन्हें कोई अधिकार नहीं है। इस प्रकार उन्हें संसद और देश के प्रति एक विशेष सामाजिक जिम्मेवारी निभानी होती है।

राज्य सभा में वर्ष 1969 तक वास्तविक अर्थ में विपक्ष का कोई नेता नहीं होता था। उस समय तक सर्वाधिक सदस्यों वाली विपक्षी पार्टी के नेता को बिना किसी औपचारिक मान्यता, दर्जा या विशेषाधिकार दिए विपक्षी नेता मानने की प्रथा थी। विपक्ष के नेता के पद को संसद में विपक्षी नेता वेतन और भत्ता अधिनियम, 1977 द्वारा अधिकारिक मान्यता दी गई। चूँकि देश, सत्ता के केन्द्र के बंद लिफाफे से आए तारीफों के पुलिन्दों को ही सहर्ष स्वीकार नहीं करता। कबीर दास जी के अनुसार जिस तरह हर इंसान को **'निंदक नियरे राखिये'** की तर्ज पर अपनी कमियां बताने की हिम्मत रखने वाले को सुनने का धैर्य होना चाहिए, वैसे ही एक आदर्श लोकतांत्रिक व्यवस्था में सत्ताधारी पक्ष को भी विपक्ष को सुनने और उसके साथ संवाद का रास्ता खुला रखना चाहिए।

एक दशक के कांग्रेसी राज के बाद 26 मई 2014 को सत्ता में आई बीजेपी को अपना दर्शन और नीतियां लेकर जनता के बीच आने का जनादेश मिला था। सरकार को दो साल हो गए हैं, इस अवधि में कांग्रेस ने लोकसभा में विपक्ष की भूमिका तो निभाई किन्तु उस भूमिका का संपूर्ण निर्वहन नहीं कर पा रहे हैं।

सही मायने में तो साल 2014 के लोकसभा चुनाव के नतीजे आने के बाद जब कांग्रेस उपाध्यक्ष राहुल गांधी को मौका मिला तो उन्होंने विपक्ष का नेता बनना तक स्वीकार नहीं किया था। यकीनन लोकतंत्र के सबसे पुराने राजनीतिक दल कांग्रेस के लिए उस करारी हार को स्वीकारना बेहद मुश्किल दिख रहा था। **ऐसा लगता है मानो ब्रिटिश राज से मुक्ति के बाद से आजाद भारत में ज्यादातर समय केंद्र की सत्ता संभालने वाली कांग्रेस विपक्ष की भूमिका ही भूल चुकी हो।**

यूपीए 1 और यूपीए 2 के दौरान कांग्रेस ने बीजेपी समेत तमाम छोटी विपक्षी पार्टियों को नजरअंदाज कर ऐसे कई फैसले लिए थे, जिन पर बहस और खुलासों की महती आवश्यकता थी, हालांकि कई बार बीजेपी ने ही

विपक्ष के विरोध के अधिकार के नाम पर सदन में इतना हंगामा किया कि कई जरूरी मुद्दों पर सार्थक बहस होने ही नहीं दी थी। वही व्यवहार दो सालों में कांग्रेस ने भी सत्ताधारी दल के विरोध के नाम पर दिखाया है।

सत्ता में आने वाला दल सैकड़ों राजनीतिक प्रपंचों और जोड़-घटाव के अलावा जनता की अपेक्षाओं पर खरा उतरने के दबाव में काम करता है। वहीं विपक्ष के पास सरकार के विरोध के अलावा अपनी खुद की कमियों का मूल्यांकन करने और उन्हें सुधारने का मौका होता है, लेकिन मोदी के सत्ता में आने से पहले जहां देश के एक दर्जन राज्यों में कांग्रेस शासित या कांग्रेस समर्थित सरकारें थीं, वहीं इन दो सालों में वह घट कर आधी रह गई हैं।

विपक्ष का काम अविश्वास प्रस्ताव, काम रोको प्रस्ताव, निंदा प्रस्ताव तक ही सीमित नहीं होता, बल्कि सरकार की गलतियों का तार्किक और संवैधानिक विरोध दर्शाना तथा सरकार को सही मार्ग दिखना भी होता है।

जिस समय देश में सत्तासीन सरकार ने जनता के बीच नोटबंदी के एक नए मुद्दे को पर फैंक कर पूरे पखवाड़े में सुर्खियाँ बटोर ली, वहीं केन्द्र के विपक्षी दल अभी भी मुद्दों की राजनीति को छोड़कर गैर जरूरी बहस को अमलीजामा पहनाने में लगे हुए हैं। फिलहाल की स्थिति में कांग्रेस स्वयं के 45 सांसदों के साथ विपक्षी की भूमिका में बैठी जरूर है किन्तु अपरिपक्व राजनीति का अध्याय भी वही बुन रही है। लस्त-पस्त होता विपक्ष का 'हाथ' जनता में एक यह संदेश भी प्रचारित कर रहा है कि कांग्रेस में शीर्ष नेतृत्व का संकट गहरा रहा है। हालांकि, शीर्ष नेतृत्व का संकट तो स्वयं बनाया हुआ कल्पित पात्र ही प्रतीत हो रहा है। भारतीय लोकतंत्र को कमजोर करने में उसी कांग्रेस का हाथ नजर आ रहा है जो कभी 'कांग्रेस का हाथ, आम आदमी के साथ' का नारा देती थी। गाँधी-नेहरू परिवार में ही उलझी हुई कांग्रेस बतौर विपक्षी दल अपने नेता को ही जनता का चहेता बनाने में असफल होती नजर आ रही है।

हाल ही में आए उपचुनावों के नतीजों ने राष्ट्रीय परिदृश्य में तो कांग्रेस को कमजोर कर दिया है। **'जनता का भरोसा जीतने की हर संभव कोशिश'** करने का वादा करने वाली कांग्रेस किसी भी दिशा में ठोस कदम उठाने में असक्षम ही साबित हो रही है। पुराने कांग्रेसी भी गांधी-नेहरू वंश की परिवारवाद वाली पार्टी में किसी 'गांधी' के बिना पार्टी के बिखर जाने का खतरा देखते हैं। वहीं सोनिया-राहुल के नेतृत्व में भरोसा खो रहे कई कांग्रेसी, पार्टी में आत्ममंथन नहीं कायाकल्प की जरूरत पर बयान दे रहे हैं। अब तो मजबूत होने के बजाए पार्टी को जोड़कर रखने वाली 'गांधी' नाम की रस्सी भी गल रही है।

अगले साल उत्तर प्रदेश में होने वाले विधानसभा चुनाव को लेकर काफी पहले से एक्शन में दिखती कांग्रेस ने हाल ही में चुनावी गणित के पुरोधा बनकर उभरे प्रशांत किशोर की सेवाएं लेने का फैसला किया। केंद्र में मोदी तो, बिहार में नीतीश कुमार की जीत का श्रेय पाने वाले चुनावी अभियान रचने वाले किशोर शायद अधिक से अधिक यूपी में कांग्रेस को बहुत बुरी हार का मुंह देखने से बचा सकें, लेकिन जीत का लक्ष्य तो तब तक दूर का ढोल ही रहेगा जब तक सोनिया गांधी के नेतृत्व वाला दल सचमुच के योग्य जमीनी नेता पैदा नहीं करेगा। हालांकि, भाजपा के पास भी मोदी के बाद उतना सशक्त कोई दूसरा नेता नहीं है जो नेतृत्व की कमान संभाल सके, लेकिन कांग्रेस के सामने तो नेतृत्व का ही संकट है। जनता के विकास में कांग्रेस का जो 'हाथ' कई दशक तक रहा है, आज वो ही अपना चेहरा खोता दिख रहा है।

वर्तमान में नोटबंदी पर कांग्रेस का खोखला और अपरिपक्व विरोध कांग्रेस को गर्त में डाल रहा है। जहाँ कांग्रेस को नोटबंदी के पहले और बाद की अव्यवस्थाओं और वैकल्पिक उपायों पर सरकार को घेरना था, वहीं कांग्रेस ने नोटबंदी को ही गलत ठहरा कर जनता के बीच तमाम कालेधन को लाने के विरोधियों में खुद को शामिल कर लिया।

दरअसल, हमारे लोकतंत्र की सबसे बड़ी मजबूती हमारी आजादी की लड़ाई में निहित है, जब महात्मा गांधी ने अहिंसा के जरिए सत्ता यानी आजादी हासिल करने का मंत्र दिया। हमने बिना हथियार उठाए, बिना कोई नरसंहार किए आजादी हासिल की और यही हमारे देश की जनता

के खून में भी है। आज तमाम तकलीफें सहकर भी जनता अगर सड़क पर नहीं उतरी है, तो इसके पीछे उसी बापू की सीख ही है, जो हमारे नोटों पर मौजूद हैं।

जरा सोचिए..! यदि आजादी हमने हथियारबंद लड़ाई लड़कर हासिल की होती तो आज का भारत आज के जितना सहनशील कभी होता? नोटबंदी का बुरा असर अभी कम नहीं हुआ है, खासकर ग्रामीण भारत में इससे होने वाली तकलीफें अभी और बढ़ सकती हैं। यकीनन देश की जनता कतार में है, सड़क पर नहीं, इसके लिए भारत की जनता को एक सलाम तो बनता ही है। उसी दौर में कांग्रेस का इस तरह का व्यवहार जनता के बीच अपनी साख पर खतरा ही पैदा कर रहा है। आखिर जनता के बीच चेहरे रंगीन नहीं, बल्कि जो है वही जाते हैं। जनता आईना है, वहाँ तो कम से कम अपने प्रासंगिक और पुश्तैनी प्रतिष्ठा को ही लेकर जाना बेहतर होता है।

कालेधन और नोटबंदी के दौर में कांग्रेस की स्थिति को देखते हुए जनता की तरफ से एक शेर है-

'गर चिरागों की हिफाजत फिर इन्हें सौंपी गई,
तो रोशनी के शहर में बस अंधेरा ही रह जाएगा'

आखिर देश के सबसे पुराने दल पर इस तरह का संकट आना गंभीर ही नहीं, वरन गंभीरतम चिंता की स्थिति में डाल रहा है। कांग्रेस संगठन के वरिष्ठ और अनुभवी नेताओं को चाहिए कि अपने राष्ट्रीय नेतृत्व के साथ बैठकर चिंतन और मनन करें। संगठन का संवैधानिक ढाँचा चापलूसों से नहीं, बल्कि कर्मठ और परिपक्व योद्धाओं से पूर्ण करना चाहिए, भले ही फिर वो युवा हों। ढाल की भूमिका से बच कर मुद्दों की राजनीति करते हुए देश की जनता को विश्वास के साथ विकल्प अर्पण करना होगा, ताकि जनमानस में कांग्रेस के प्रति फिर से भरोसे की बयार लौट आए। मजबूत विपक्ष ही कल की सत्ता का पुरोधा बन जाता है, जैसा मोदी के रूप में बीजेपी को मौका मिला। जनता के बीच कांग्रेस के प्रति उम्मीद जागे और फिर **'कांग्रेस के अच्छे दिन लौट आएँ।'**

-पत्रकार एवं स्तंभकार
09893877455
arpan455@gmail-com

विहिप क्षेत्रीय संगठन मंत्री का जम्मू-कश्मीर प्रवास

जम्मू 29 नवम्बर, विश्व हिन्दू परिषद द्वारा विश्व के 40 देशों में हिन्दू, हिन्दुत्व एवं हिन्दू समाज की रक्षार्थ कार्य चलाए जा रहे हैं। इसी के अर्तंगत जम्मू-कश्मीर प्रान्त में भी प्रखण्ड, जिला, भाग, विभाग एवं प्रान्त स्तर पर हितचिंतक अभियान चलाया जा रहा है। विश्व हिन्दू परिषद उत्तर क्षेत्रीय संगठन मंत्री श्री करूणा प्रकाश जी का 4 दिवसीय प्रवास जम्मू-कश्मीर प्रान्त में हुआ। इस अवसर पर श्री करूणा प्रकाश जी ने बजरंगदल एवं विहिप द्वारा चलाए जा रहे हितचिंतक अभियान के कार्यक्रम में उपस्थिति दी और बजरंगदल द्वारा चलाए जा रहे साप्ताहिक हनुमान चालीसा के कार्यक्रमों में भी भाग लिया। अपने प्रवास के अर्तंगत करूणा प्रकाश जी ने जम्मू ग्रामीण का भी दौरा किया।

हितचिंतक अभियान का उद्देश्य जो व्यक्ति भारत में विकसित हुए जीवन मूल्यों में आस्था रखता है, वह हिन्दू है। इससे भी आगे बढ़कर कहा गया है कि जो व्यक्ति अपने आप को हिन्दू कहता है, वह हिन्दू है। हिन्दू समाज को गतिशील, सक्रिय और सुधरे रूप में प्रतिष्ठापित करने हेतु घोष वाक्य दिये गये।

''हिन्दवः सोदराः सर्वे, ना हिंदु पतितो भवेत,
मम दीक्षा हिंदू रक्षा, मम मंत्रः समानता।।''

हिन्दू समाज के लिए हितचिंतक बनकर विश्व हिन्दू परिषद के द्वारा चलाए जा रहे आयामों जैसे बजरंगदल, मातृशक्ति, दुर्गावाहिनी, एकल विद्यालय द्वारा किए जा रहे सेवा कार्य सत्संग, गौरक्षा के कार्यों में सहभागी होकर नयी पीढ़ी के भविष्य को उज्ज्वल एवं देश के गौरव को बढ़ायें।

इस अवसर पर करूणा प्रकाश जी ने बाबा यात्री न्यास, विश्व हिन्दू परिषद की प्रान्त टोली की बैठक ली। अब तक लगभग 35,000 सभ्य नागरिक हितचिंतक अभियान का हिस्सा बन चुके हैं।

-राजेश भसीन

'नये वर्ष में नये भारत का निर्माण'

'नोटबन्दी' के उत्साहवर्धक परिणाम से उत्साहित मोदी जी ने बीजेपी संसदीय दल की बैठक में संकेत दिया है कि व्यवस्था सुधार के लिए यह आखिरी कदम नहीं है और 'गरीब' के कल्याण के लिए समर्पित मोदी जी अभी और कठोर निर्णय लेने में भी हिचकेंगे नहीं। ऐसा प्रतीत हो रहा है कि 'नये वर्ष में नये भारत का निर्माण' उनका संकल्प है। अत: अब आगे के क्रांतिकारी निर्णय कैसे हो पता नहीं परंतु क्या मोदी जी भविष्य में निम्न बिंदुओं पर कोई सकारात्मक विचार करेंगे-

- 'बंग्लादेश, पाकिस्तान, अफगानिस्तान, म्यंमार व सूडान आदि से करोड़ों की संख्या में आये हुए घुसपैठियों से कब देश को मुक्ति मिलेगी? जिनके कारण देश की अर्थव्यवस्था पर भारी चोट पड़ रही है। विभिन्न अपराधों व आतंकवादी षड्यंत्रों में भी इनकी संलिप्तता पायी जाती है।
- क्या कश्मीरी अलगाववादियों व वहां की जनता पर केंद्र द्वारा वर्षों से दिए जा रहें विशेष आर्थिक पैकेज की कोई उपयोगिता है?
- क्या राष्ट्र के धर्मनिरपेक्ष स्वरुप को बिगाड़ने वाला अल्पसंख्यक आयोग व मंत्रालय गरीब बहुसंख्यकों को आहत नहीं कर रहा है?
- क्या वर्तमान सभी शासन-प्रशासन के अधिकारियों, सांसदों व विधायकों की सुख सुविधाओं के नियमों में सुधार हो सकता है?
- क्या सरकारी कार्यालयों में बिना 'सुविधा शुल्क' कार्य करने की प्रवृति का प्रचलन बंद नहीं होना चाहिये?
- क्या भूतपूर्व सभी राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति, राज्यपाल, प्रधानमंत्री, केंद्रीय मंत्री, मुख्यमंत्री, सांसदों और विधायकों आदि के 'प्रिवी पर्सो' पर भी कोई संशोधन हो सकता है?
- क्या उन करोडों 'भूतपूर्व' सरकारी अधिकारियों एवं कर्मचारियों की पेंशन नीतियों में भी उचित परिवर्तन की सम्भावना है?
- क्या विभिन्न जेलों में बंद आतंकियों व अपराधियों का बढ़ता बोझ बड़ी चिंता का विषय नहीं?
- क्या सम्भ्रांत लोगों (जेंटलमेन) का खेल 'क्रिकेट' में हो रही सट्टेबाजी पर रोक लगा कर काले धन पर भी अंकुश लगेगा?

उपरोक्त के अतिरिक्त और भी अनेक समस्यायें है जिनके समाधान को भी मोदी जी को प्राथमिकता से लेना होगा। निसंदेह एक सशक्त व कुशल प्रशासक मोदी जी का राष्ट्र के प्रति समर्पण और दूरदर्शिता उनकी कठोर निर्णायक क्षमता का परिचय कराती है। 'नोटबंदी' के क्रांतिकारी कदम ने देश में दशकों की भ्रष्टाचारी व्यवस्था के उत्तरदायी राजनेताओं, अधिकारियों, कर्मचारियों, पूंजीपतियों, उद्योगपतियों व व्यापारियों आदि के नेटवर्क पर कड़ा प्रहार किया है। साथ ही साथ आतंकियों के आर्थिक स्रोत्र जाली करेंसी, नशीले पदार्थ व अवैध हथियारों आदि पर भी नियंत्रण संभव होगा?

अत: आतंकवाद व भ्रष्टाचार मुक्त भारत के निर्माण के लिए भारतवासियों को इस 'आर्थिक अघोषित आपातकाल' में थोड़ा धैर्य रखना होगा। किसी भी लंबी बीमारी के उपचार के लिए अंतत: 'शल्य चिकित्सा' आवश्यक हो जाती है ।

-विनोद कुमार सर्वोदय

गाजियाबाद

❑

अमृत-वचन

ये न हृष्यन्ति लाभेषु नालाभेषु व्यथन्ति च।
निर्ममा निरहंकाराः सत्त्वस्थाः समदर्शिनः॥

जीवन में जो पुरुष किसी भी प्रकार के लाभ होने पर प्रसन्न नहीं होते और न हानि होने पर दु:खी ही होते हैं। जो किसी भी प्रकार की ममता तथा अभिमान से सदा दूर रहते हैं, सभी प्राणियों को अपने जैसा समझते हुए समानभाव रखते हैं ऐसे लोग इस लोक में सुख भोगते हैं तथा परलोक में भी सुखी रहते हैं।

नोट बंदी से भ्रष्टाचार मुक्त डिजिटल भारत की ओर

-**विनोद बंसल,** राष्ट्रीय प्रवक्ता-विहिप

आठ नवम्बर 2016 के आठ बजे की वह घड़ी भारतीय अर्थ व्यवस्था के शुद्धिकरण के लिए एक ऐतिहासिक पल के रूप में जानी जाएगी। 500 व 1000 रूपए के नोटों को चलन से बंद करने की अचानक घोषणा ने समस्त देश वासियों को हिला कर रख दिया। गत एक माह के अनुभव ने एक बात तो सिखा दी कि हम समस्त भरत वंशियों को अब नकदी के मोह से उबर कर 'नकदी रहित व्यवहार (कैश लैस ट्रान्जेक्शन)' का अभ्यास तुरंत प्रभाव से करना पडेगा, जो दुनियाभर के विकसित तथा विकासशील देश पहले से ही सफलता पूर्वक कर रहे हैं। दूसरे, अब तो सरकार ने इन नकदी रहित व्यवहारों पर विविध छूटों की घोषणा भी कर दी है जिनके तहत अब आप पेट्रोल पम्प से 0.75 प्रतिशत, रेल यात्रा पर 0.5 प्रतिशत (10 लाख तक मुफ्त बीमा के साथ), रेल भोजन व अन्य सुविधाओं पर 10 प्रतिशत, राष्ट्रीय राजमार्ग टोल पर 10 प्रतिशत, बीमा भुगतानों पर 10 प्रतिशत तक छूटों के साथ अनेक डिजिटल भुगतान जिन पर अभी तक व्यवहार शुक्ल (ट्रांजेक्शन टैक्स) लगा करते थे, में भी छूट की घोषणा की है। साथ ही देशवासियों (खासकर विद्यार्थियों/युवकों) से लेस कैस सोसाइटी बनाने हेतु www.mhrd.gov.in@visaka पर उपलब्ध प्रजेंटेशन को पढ़ समझ समझा कर कम से कम 10 परिवारों को डिजिटल बनाने का आह्वान भी किया है।

कैसे करें बिना नकदी के भुगतानः

इलेक्ट्रॉनिक बटुआ (ई-वॉलेट) व बैंकिग ऐपः

1. अपने मोबाइल के प्ले-स्टोर से कोई भी इलेक्ट्रॉनिक बटुआ (ई-वॉलेट) या बैंकिग ऐप डाउनलोड कर इंस्टॉल करें।
2. यदि ई-वॉलेट है तो उसमें अपने बैंक खाते से अपनी भुगतान जरूरतों का अनुमान कर कुछ पैसे स्थानांतरित (ट्रांसफर) करें और यदि बैंकिग ऐप है तो उसे अपने सेविंग या चालू खाते से लिंक करें।
3. बस अब क्या बचा? अब तो वॉलेट को क्लिक करो, जिस व्यक्ति को आपने भुगतान करना है ई-वॉलेट के द्वारा तो उसका मोबाइल नम्बर डालो, पैसे भरो और कन्फ़र्म करो। लो, एक संदेश आपके पास कि आपके खाते से पैसे निकल गए और दूसरा संदेश भुगतान प्राप्त करने वाले व्यक्ति के मोबाइल में कि उसके वॉलेट में उतने ही पैसे जमा हो गए, स्वतः ही पहुंच गया। वह भी बिना किसी चार्ज के।
4. इसमें आपके वॉलेट से किए गए ट्रान्ज़ैक्शन पर अनेक प्रकार के केशबैक तथा अन्य सुविधाएं भी समय-समय पर मिलती रहती हैं।
5. यही काम यदि बैंकिग ऐप से करना हो तो आपको जिस व्यक्ति को भुगतान करना है, उसके बैंक खाते का नम्बर व आइएफ़एससी कोड सिर्फ़ एक बार लेकर उसे अपने ऐप में सुरक्षित (सेव) करना होता है। बस फिर क्या है ऐप में जाओ, व्यक्ति का नाम चुनो, जितना भुगतान करना है, पैसे भरो और कन्फर्मेशन को क्लिक करो। बस उसी तरह दोनों को सन्देश गया और भुगतान हो गया।
6. भुगतान का तीसरा और अपेक्षाकृत पुराना तरीका है 'प्लास्टिक मनी', यानि, डेबिट कार्ड या क्रेडिट कार्ड के माध्यम से भुगतान। इस तकनीक में भुगतान करने वाले के पास प्लास्टिक का कोई डेबिट कार्ड या क्रेडिट कार्ड तथा प्राप्तकर्ता के पास कार्ड स्वैपिंग मशीन होना अनिवार्य है। डेबिट कार्ड तो हर बैंक अपने ग्राहक को खाता खोलते ही सबसे पहले दे ही देता है किन्तु क्रेडिट कार्ड अलग से बैंक में आवेदन करना पड़ता है। दुकानदार या प्राप्तकर्ता को मशीन तो लगभग 500 रुपए मासिक भुगतान पर अनेक बैंकिग से जुड़ी संस्थाएं आसानी से दे देती हैं किन्तु ये कम्पनियां प्रत्येक ऐसे व्यवहार पर एक से दो प्रतिशत तक कमीशन काट कर दुकानदार या प्राप्तकर्ता के खाते में पैसा जमा करते हैं। भुगतान करने वाले को प्रत्येक आर्थिक लेनदेन के समय अपना कार्ड और उसका गोपनीय पासवर्ड याद रखना अनिवार्य है। कार्ड नम्बर व कोई भी पासवर्ड किसी के साथ

कभी साझा नहीं करना चाहिए, वह चाहे कोई भी हो क्यों न हो।

ई-वॉलेट : पेटीएम, मोबीक्विक, रीचार्ज, औक्सीजन, ओलामनी, जीओमनी, एयर्टेल मनी, एम पैसा, पौकेट्स आदि।

बैंकिंग एप : यूपीआई, एसबीआईबडी, पेजेप, चिलर इत्यादि।

ई शॉपिंग : किसी भी प्रकार का घरेलू या व्यावसायिक सामान खरीदने हेतु ई-शॉपिंग यानि इंटरनेट के माध्यम से 'आदेश (आर्डर) व भुगतान (पेमेन्ट) एक साथ या भुगतान माल की प्राप्ति पर', दोंनों विधियों का प्रयोग कर सकते हैं। इस प्रकार के व्यवहार में अनेक प्रकार की छूट तथा सामान आपके घर पर आने पर भी यदि पसंद न आये तो वापसी तक की सुविधा कई विक्रेता कम्पनियां देती हैं। इस हेतु बिग बास्केट, ग्राफर्स, नेचर बास्केट, जैसे ऑनलाइन किराने तथा फल-सब्जी के स्टोर, अपोलो फार्मेसी, मेडीलाइफ, एम केमिस्ट, मेडीडार्ट, मेडीस्टार, नेट्मेड, बुकमेड, 1 एमजी जैसी अनेक ऑन लाइन मेडीकल स्टोर के साथ-साथ वेजीकार्ट, बिग बाजार, रिलाइंस "रेश, इजीडे, हाइपसिटी जैसे अनेक ऑफ लाइन सुपर स्टोर व उनकी चैन उपलब्ध हैं। यहां आप आसानी से किसी भी तरह से भुगतान कर सकते हैं।

सुविधा बिल पे : यह सुविधा अपने डेबिट या क्रेडिट कार्ड से जोड़ कर लगभग हर बैंक देता है जिसके माध्यम से हम हर रेग्यूलर मासिक, तिमाही, छमाही या वार्षिक बिलों का भुगतान आसानी से कर सकते हैं। जैसे पानी, बिजली, टेलीफोन, मोबाइल, बीमा, प्रोपर्टी टैक्स इत्यादि को बैंक कार्ड से मात्र एक बार लिंक कराकर जीवन भर उसके देरी से भुगतान या किसी भी प्रकार की भूल से होने वाली लेट फीस से बच सकते हैं। खाते में भुगतान हेतु अपेक्षित राशि की समय पर व्यवस्था करना आपकी।

फण्ड ट्रान्सफर : भुगतान के उपरोक्त साधनों के अलावा हम परम्परागत चेक पेमेन्ट, आरटीजीएस, एनईएफटी, फंड ट्रान्सफर, आइएमपीएस इत्यादि साधनों का प्रयोग भी आज पहले से अधिक आसानी से किया जा सकता है। भुगतान में चेक देने से पूर्व उसे दो समानान्तर लाइनों द्वारा एकाउण्ट पेयी करना न भूलें जिससे पैसा सही खाते में जमा होना सुनिश्चित हो सके। आरटीजीएस, एनईएफटी तथा आइएमपीएस व्यवहार करते समय प्राप्तकर्ता के खाते का नाम, खाता संख्या, बैंक का नाम, उसका पता तथा आइएफएससी कोड भरते समय पूरी सावधानी बरतें जिससे पैसा समय पर सही खाते में पहुंच सके।

उपरोक्त सुविधाओं का लाभ उठाने हेतु एक स्मार्ट फोन (जो लगभग दो हजार तक में आ जाता है) के साथ इन्टरनेट सुविधा (जो 500 रुपए मासिक में उपलब्ध है) की आवश्यकता है। हालांकि कुछ सुविधाएं इनके बिना भी प्राप्त की जा सकती हैं।

आर्थिक व्यवहारों में नकदी का प्रयोग जितना कम होगा, काले धन का बाजार उतना ही मंदा होगा। आवश्यकता है बस एक छोटी सी सुविधा, सावधानी, संकल्प तथा मन के संयोजन की। फिर देखो भारत को पुनः विश्व गुरू बनने से कौन रोक सकता है।

Vinodbansal0_@gmail.com @vinod-bansal

❑

कभी भारत का हिस्सा और हिन्दू राष्ट्र था अफगानिस्तान!

नई दिल्ली। अफगानिस्तान की पहचान इन दिनों आतंकवाद और तालिबान से होती है लेकिन एक वक्त था जब अफगानिस्तान की पहचान एक हिन्दू राष्ट्र के तौर पर होती थी। अफगान शब्द, संस्कृत भाषा के अवगान से निकला हुआ माना जाता है। यह देश 7वीं सदी तक अखंड भारत का हिस्सा था। एक वक्त यहां बौद्ध धर्म फला-फूला और अब इसकी पहचान एक इस्लामिक राष्ट्र के रूप में है। 17वीं सदी की शुरुआत तक तो अफगानिस्तान का नाम भी नहीं था। महाभारत काल में इसके उत्तरी इलाके में गांधार महाजनपद था जिसके कारण इसकी राजधानी कांधार कहलाई, इसके अतिरिक्त आर्याना, कम्बोज आदि इलाके इसमें सम्मिलित थे।

-हिन्दुस्थान

निर्धन का कल्याण

प्राय: राजनेता अपनी राजनीति को चमकाने के लिए निर्धन के कंधे पर बन्दूक रखकर गोली चलाते है और धनवान को कोसने से बाज नहीं आते। जबकि लोकतांत्रिक व्यवस्था में दशकों से निर्धन भी धनवान बनते आये है। सरकार की अनेक योजनाओं से दलित, अतिदलित, सूचित व अनुसूचित जनजातियां, पिछड़ा वर्ग व अल्पसंख्यक आदि निरंतर लाभान्वित हो रहे है।

कोई अगर फिर भी निर्धन है तो वह उसके लिए स्वयं उत्तरदायी है। देश में दशकों से साम्यवादियों व कुछ अन्य नेताओं द्वारा निर्धन व धनवान में भेदभाव का घृणित प्रचार करके समाज को भ्रमित ही किया जाता है। एक बार हमारी पूर्व प्रधानमंत्री स्व. श्रीमती इंदिरा गांधी ने भी लोकलुभावन 'गरीबी हटाओं' का नारा दिया था।

प्राय: धनपतियों की सामर्थ्य, योग्यता व पैतृक सम्पति ही आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करती है। उसके लिए धनपतियों को कोसना क्या अनुचित नहीं? यह विचार भी सोचने योग्य है कि धनपति ही अपनी संपत्ति का रिस्क लेकर उद्योग आरम्भ करते है और अनेक गरीब लोगों को रोजगार देकर उनके परिवारों का पालन पोषण करते हुए सरकार को भी राजस्व देते है। किसी ने अपनी पैतृक संपत्ति के साथ-साथ अपने कौशल व परिश्रम से आवश्यकता से अधिक धनोपार्जन किया है तो उसमें गलत क्या? जबकि वह सरकार को राजस्व देकर राष्ट्र के विकास में भी सहयोगी है।

अत: जिस प्रकार शिक्षित व अशिक्षित, योग्य व अयोग्य, अधिकारी व कर्मचारी, स्वामी व सेवक आदि में भेद बना हुआ है उसी प्रकार धनवान और निर्धन में भेद स्वाभाविक ही है। इस सामाजिक असमानता को समस्या नहीं माना जाना चाहिये बल्कि इस असमानता की जड़ को समझना चाहिये। देश क्या विदेश में भी अनेक ऐसे उदाहरण है कि परिश्रम करने वाला समाज धीरे-धीरे उन्नति करके अपनी निर्धनता के कलंक को मिटाने में सफल हुआ है। आवश्यकता है आलस्य त्याग कर कर्मठ बनने की।

यह भी कहना अनुचित नहीं होगा कि विभिन्न परिस्थितियों में निर्धन समाज सरकारी योजनाओं व सामाजिक अनुदानों पर आश्रित होने से अपनी कर्मठता को भूल कर किंकर्तव्यविमुख होता जा रहा है। इस प्रकार आलसी व निठल्लापन बढ़ने से निर्धनता कैसे समाप्त हो सकती है? किसी को बार-बार अनुदान पर आश्रित रखने से अच्छा है उसको काम देकर कर्मचारी व उद्यमी बनाया जाय।

द्वितीय विश्व युद्ध के बाद विनाश के कगार पर खड़ा हुआ जापान केवल व्यापार और उद्योग के बल पर आज सुदृढ़ अर्थव्यवस्था का श्रेष्ठ उदाहरण। उस समय जापानियों का नारा था "NO AID ONLY TRADE" अर्थात 'सहायता नहीं केवल व्यापार'। इसी प्रकार चीन जो की एक साम्यवादी देश है, ने केवल उद्योग व व्यापार के बल पर अपने को ठसक के साथ आर्थिक जगत में स्थापित किया हुआ है। क्या आज एक छोटे से राष्ट्र इजराइल के निवासियों ने अद्‌भुत इच्छाशक्ति व कर्मठता के बल पर रेगिस्तान को भी हरा भरा नहीं किया जिससे वे अपनी अर्थव्यवस्था पर दम्भ करें तो अनुचित नहीं। विश्व में ऐसे और भी उदाहरण होंगे जो जिनसे प्रमाणित होता है कि कर्म प्रधान समाज के निर्माण से ही निर्धनता दूर हो सकती है।

अत: धनवान को कोसना, गरीबी हटाओ व निर्धन के कल्याण की बातें केवल एक 'जुमला' है जो भारतीय राजनीति का अभिन्न अंग बन चुका है। विकास के रथ को गति देने वाले हमारे लोकप्रिय प्रधानमंत्री जी भी अपने कड़क 'नोटबंदी' के निर्णय को गरीब के लिए अत्यंत कल्याणकारी मानते है।

-विनोद कुमार सर्वोदय
गाजियाबाद

❑

विनम्र बनो, तब तुम्हारी की हुई प्रार्थना सभी बादलों को चीर कर परमात्मा के सिंहासन तक पहुँच जाएगी।
-टी.एल. वासवाणी

सम्पादक के नाम

अमेरिका के 45 वें राष्ट्रपति के रुप में डोनाल्ड ट्रम्प की अप्रत्याशित जीत का मुख्य कारण उनका प्रखर राष्ट्रवाद है। माननीय डोनाल्ड ट्रम्प ने आरम्भ से ही अप्रवासियों और मुस्लिम शरणार्थियों पर प्रतिबंध लगाने का संकेत दे कर वैश्वीक जिहाद को समाप्त करने की दृढ़ इच्छा का परिचय दिया था। अपने चुनाव प्रचार के अभियान में राजनैतिक लाभ-हानि की उपेक्षा करते हुये कटर इस्लाम के विरुद्ध उनकी आक्रामकता ने अमरीका के ही नहीं संसार के प्राय: समस्त मानवतावादी समाज को अपनी ओर आकर्षित किया। अनेक दुष्प्रचार होने के उपरान्त भी मोदी जी के समान राष्ट्रवादियों और इस्लाम से पीड़ित लोगों ने उनमें भरोसा किया है। निसंदेह डोनाल्ड ट्रम्प एक परंपरागत राजनेता नही है फिर भी उनको समाज की संवेदनाओं का आभास हो चुका था।एक बार तो रिपब्लिकन पार्टी भी उनके इस्लामिक आतंकवाद पर स्पष्ट व साहसिक वक्तव्यों से दुविधाग्रस्त थी कि उनको अपना उम्मीदवार घोषित करें या नहीं? परंतु निर्भीक व साहसिक ट्रम्प ने अपनी इस्लाम विरोधी बयान बाजी जारी रखी। जिससे अमरीका का राष्ट्रवादी समाज प्रभावित हुए बिना नहीं रहा। परिणामत: अनेक शत्रुओ व षडयंत्रो से बचते हुए डोनाल्ड ट्रम्प वर्षो से राजनीति में सक्रिय अपनी प्रतिद्वंदी हिलेरी क्लिंटन को हराने में सफल हुए।

अब विश्व के समस्त आतंकवाद विरोधी नेताओं को एकजुट होकर इस्लाम के धर्म गुरुओं व उनके विद्वानों को शरीयत, इस्लामिक शिक्षाओं व दर्शन में आवश्यक संशोधन करवाने के लिये बाध्य करना होगा। वैसे भी ट्रम्प की जीत को वैश्विक जिहाद पर एक अप्रत्यक्ष प्रहार माना जाय तो आश्चर्य नहीं। ❑

वह सुखी है, जिसने स्वार्थ भावना को पूर्णत: वश में कर लिया है। वह सुखी है, जिसने शान्ति प्राप्त की है, वह सुखी है जिसने सत्य को पहचाना है।

-श्रीमद भगवत् गीता

निसंदेह काला धन और भ्रष्टाचार देश के लिए अभिशाप है, लेकिन उसका उत्तरदायी कौन? क्या विभिन्न उद्योग व व्यापार में सरकार द्वारा कोटा, परमिट व लाइसेंस व्यवस्था आदि के कड़े नियमों का होना भ्रष्टाचार को बुलावा नहीं देता? जिससे नेताओं, अधिकारियों और उनके अधिकृत एजेंटो को 'शुल्क' लेने में सुविधा हो जाती है। यही 'सुविधा शुल्क' जो रिश्वत का परिष्कृत रुप है, सफेद धन को काला बना देता है। इस प्रकार दिन रात यह व्यवस्था फलती फूलती रही और भौतिकवाद में डूबने के लिए सब 'सफेद' को छोड़ कर 'काले' होते गये। अनेक अवसरों पर सिद्धान्तवादियों को भी काले धन ने आकर्षित किया है। सामान्यत: सरकारी सेवायें, स्वास्थ सेवायें, औद्योगिक व व्यापारिक प्रतिष्ठान, शिक्षा व खेल जगत आदि अनेक प्रकार के भ्रष्टाचारों से ग्रस्त है। इसके लिए व्यवस्था को दोष दें या मानवीय गुणों को जिसमें नैतिक व चारित्रिक पतन की भी कोई सीमा नहीं रही। अत: धन तो धवल है, लक्ष्मी का रुप है और समाज का पोषक है फिर 'काला' कैसे हो गया?

प्रेषक : **विनोद कुमार सर्वोदय**
गाजियाबाद

पद्मनाभ मंदिर में महिलाओं को ड्रेस कोड में छूट

तिरुअनंतपुरम, प्रेट्र। दुनिया के सबसे धनी हिंदू मंदिर पद्मनाभ स्वामी मंदिर प्रबंधा ने महिला श्रद्धालुओं को ड्रेस कोड में छूट देने की घोषणा की है। अब वे सलवार कमीज और चूड़ीदार पहनकर भी मंदिर में पूजापाठ कर सकती हैं। मंदिर के कार्यकारी अधिकारी के.एन. सतीश ने मंगलवार को इसकी घोषणा की। अब तक सलवार कमीज या चूड़ीदार पहन कर आने वाली महिला श्रद्धालुओं को दर्शन पूजन के लिए ऊपर से धोती पहननी पड़ती थी। स्थानीय भाषा में इसे मुंडु कहा जाता है।

-दै0जागरण

कुटुंब, राष्ट्रीयता व सामाजिक मर्यादाएं

-विनोद बंसल, राष्ट्रीय प्रवक्ता-विहिप

किसी भी देश या समाज की उन्नति उसके नागरिकों की सोच व व्यवहार पर निर्भर करती है। भारतीय परिप्रेक्ष्य में परिवार या कुटुंब का महत्त्व सदा से ही रहा है। सृष्टि की उत्पत्ति से लेकर आज तक जितने भी महापुरुष या दिव्यात्माएं इस पुण्य भूमि पर जन्मी वे किसी न किसी कुल या कुटुंब की मर्यादा से बंधकर या उनके संस्कार ग्रहण कर ही समाज का निर्देशन कर सकी और हजारों-लाखों वर्षों के उपरांत भी आज तक विश्व का मार्ग दर्शन करने में सक्षम हुईं। त्रेता युग में इक्ष्वाकु वंश में जन्मे बालक श्री राम अपने कुल की विविध मर्यादाओं का पालन करते हुए ही तो मर्यादा पुरुषोत्तम कहलाकर समस्त सृष्टि में भगवान का दर्जा पा गए। 'रघुकुल रीति सदा चलि आई, प्राण जाएं पर बचन न जाई', आखिर रघुकुल वंश के लिए ही तो प्रसिद्ध है। जिस पर चलकर जीवन के असंख्य कष्टों को भी नजरंदाज कर श्री राम चौदह वर्ष तक कोमलांगी अर्धांगिनी माता सीता के साथ घोर घने जंगलों में रहे। सम्पूर्ण जीवन में अनेक बाधाओं से लड़ते हुए वे अपने कर्तव्य पथ से कभी विचलित नहीं हुए। बल्कि वनवास जैसे कठिनतम समय का प्रयोग उन्होंने बड़े ही नियोजित ढंग से किया। एक ओर उन्होंने केवट, भेलनी, अहिल्या व जटायु जैसे समाज के अति पिछड़े लोगों को गले लगा कर समाज की मुख्यधारा से जोड़ा वहीं दूसरी ओर सुग्रीव, हनुमान और अंगद जैसे योद्धाओं को उनकी शक्ति का परिचय दिलाकर चहुँ ओर व्याप्त आसुरी शक्तियों के विरुद्ध लड़ने का साहस उनमें विकसित किया। उस काल में राम जी के स्थान पर हम यदि होते तो उस अभावग्रस्त अवस्था में भी स्वाभिमान पूर्वक दुनिया की सबसे बड़ी साधन संपन्न मायावी आसुरी शक्ति रावण पर विजय पाने की कल्पना भर करना भी हमारे लिए संभव नहीं था। किन्तु अपने कुल यानी कुटुंब के संस्कार और राष्ट्र जागरण की धृण इच्छा शक्ति ने ही शायद भगवान राम को उस काल के शक्तिमान रावण को ललकारने की प्रेरणा दी। याद रखना चाहिए कि साधन संपन्न रावण रथ पर था। जबकि, राम जी पैदल ही युद्ध कर रहे थे। देवताओं ने भी अपना विमान तब तक युद्ध भूमि में नहीं भेजा जब तक कि उन्होंने मेघनाद जैसे इन्द्रजीत को नहीं मार दिया। यानि श्री राम की अजेय शक्ति का विश्वास होने पर ही देवताओं ने उन्हें सहयोग की पेशकश की।

द्वापर युग में कुरुवंश की लड़ाई ने समाज के लिए जो मर्यादाएँ तय की या धर्म और अधर्म का जो भेद स्पष्ट किया वह एक ही कुटुंब में दो प्रकार की विपरीत सोच का ही तो परिणाम था। यदि कलयुग में देखें तो चीन के हान वंश से लेकर सऊदी कुरेश कबीले तक और ब्रिटिश 'किंगडम' से लेकर इराक के सद्दाम परिवार तक, अनेक गैर भारतीय परिवारों में कुटम्ब कलह के कारण ही सत्ता परिवर्तन भी हुए। कुछ लोग हैं जिन्हें अपने पड़ोसियों का लहू देखे बिना चैन नहीं मिलता, किसी की जान लिए बिना रोटी गले से नहीं उतरती। किन्तु इतिहास साक्षी है कि भारत ने हमेशा बचाव में ही हथियार उठाये हैं। चाणक्य, समर्थ गुरु रामदास, माता जीजाबाई, चन्द्रगुप्त मौर्य और वीर शिवाजी जैसे महा पुरुषों के संस्कार ही तो है जो हमारे अन्दर नित नई प्रेरणा व ऊर्जा का संचार करते हैं।

सामाजिक मर्यादाएं जब तार-तार होने लगती हैं तब राष्ट्रीय मूल्यों का भी ह्रास होने लगता है। एककुटुंब के लोग विविध विचारों के तो हो सकते हैं किन्तु उस कुटुंब की एकता अखण्डता और विकास हेतु आवश्यक है कि उसे एकजुट रखने वाले तत्व कभी कमजोर न पड़ें। अर्थात् एक दूसरे के प्रति प्रेम, दया, समर्पण के साथ एकत्व या एकरूपता के भाव का होना नितांत आवश्यक है। जिस प्रकार एक कुटुंब में संस्कारवान लोग एकत्व का भाव लेकर बुजुर्गों का सम्मान करते हुए रहते हैं उसी प्रकार किसी भी राष्ट्र की उन्नति के लिए उन्नत कुटुंब

व्यवस्था, संस्कारवान, कर्मठ तथा राष्ट्रीय मूल्यों से ओत-प्रोत नागरिक नितांत आवश्यक हैं। किसी भी राष्ट्र के चहुँ मुखी विकास के लिए आवश्यक है कि उसके नागरिक राष्ट्रीयता की भावना से किसी प्रकार का समझौता न कर सकें। बात बात पर कभी वन्दे मातरम का, कभी भारत माता कि जय का, तो, कभी राष्ट्र गानः जन गण मन का विरोध करने वाली विचारधारा ही तो राष्ट्र को कमजोर करने का षड्यंत्र रचती रहती है।

देखने में आ रहा है कि जैसे-जैसे संयुक्त परिवार यानी कुटुंब व्यवस्था टूट रही है लोगों में संस्कार हीनता पनप रही है। बात-बात पर लोग धैर्य खो बैठते हैं। जिन हिन्दू परिवारों में सामान्य रूप से कभी 8-10 बच्चे होते थे आज एक या दो ही मुश्किल से हो पा रहे हैं। परिणामतः बच्चों को न बहन का ज्ञान, न भाई का, न चाचा का, न चाची का, न बुआ का, न फूफा का, न ताऊ का, न ताई का, न साली का, न भाभी का। जब नई पीढ़ी इन रिश्तों को समझेगी ही नहीं तो उनका सम्मान कैसे जानेगी और आपसी प्रेम भाव कैसे बढ़ेगा। जब प्रेम व एक दूसरे के प्रति समर्पण नहीं तो राष्ट्रीय भावना कैसे बलवती होगीा जब बच्चा ही एक या दो होंगे तो सेना में कौन जाएगा, धर्म प्रचार कौन करेगा परिवार कि आजीविका कौन चलाएगा। बहिनों को जिहादी दुष्टों से कौन बचाएगा और रिश्तों की बागडोर कौन सम्भालेगा। अर्थात् राष्ट्र की मजबूती तथा विकास के लिए आदर्श कुटुंब व्यवस्था व सामाजिक मर्यादाओं की अहम् भूमिका होती है।

पता : 329, संत नगर, पूर्व कैलाश,
नई दिल्ली-110065
चल दूरभाष :9810949109
Tweet : @vinod&bansal
Email : Vinodbansal01@gmail-com

हृदय से ईर्ष्या को निकाल दो और हिंसा से किनारा करो।

-सामवेद

हे प्रभो! मुझे असत् से सत् की ओर, तमस् (अंधकार) से ज्योति की ओर, मृत्यु से अमरता (अमृत) की ओर ले चलो। ओम शान्तिः शान्तिः शान्तिः।

-उपनिषद

समवेदना संदेश

तमिलनाडू की मुख्यमंत्री सुश्री जयललिता के निधन पर विश्व हिन्दू परिषद ने गहरी समवेदना व्यक्त की है। उन्हें एक महान महिला नेत्री बताते हुए विश्व हिन्दू परिषद के अंतर्राष्ट्रीय महामंत्री श्री चम्पत राय ने कहा है कि उन्होंने अपनी सम्पूर्ण जीवन लीला में अनेक चुनौतियों का सामना करते हुए सदा गरीब और पीड़ितों के हित में काम किया। एक महा मानवतावादी के साथ सम्पूर्ण तमिलनाडू के लोगों के सामाजिक जीवन उत्थान हेतु उन्हें सदैव याद किया जाएगा। अनेक हमलों के बावजूद वे सदा ही एक स्वच्छ राजनेता के रूप में उभरी।

भगवान उनकी आत्मा को अपने श्री चरणों में स्थान दें तथा उनके परिजनों व शुभचिंतकों, खासकर तमिलनाडु की जनता को इस अपूर्णीय क्षति को सहन करने की शक्ति प्रदान करें।

प्रेषक : **कोटेश्वर शर्मा**
केन्द्रीय मंत्री कार्यालय
विश्व हिन्दू परिषद दिल्ली

श्री श्री रविशंकर को मिला अंतरराष्ट्रीय शांति पुरस्कार

नई दिल्ली। आध्यात्मिक गुरु श्री श्री रविशंकर को एक अंतरराष्ट्रीय शांति पुरस्कार से नवाजा गया। उनको सम्मान विश्व शांति सुनिश्चित करने में प्रयासों के लिए दिया गया है। गृहमंत्री राजनाथ सिंह ने विज्ञान में भवन में आयोजित समारोह में आर्ट ऑफ लिविंग के संस्थापक को 'डॉ. नागेंद्र सिंह अंतरराष्ट्रीय शांति पुरस्कार' प्रदान किया। पुरस्कार की स्थापना डॉ. नागेंद्र सिंह की स्मृति में की गई है। वह हेग स्थित अंतरराष्ट्रीय कोर्ट में पहले भारतीय जज थे।

-दै0जागरण